अंकुर

राजभाषा के लिए समर्पित वार्षिक गृह पत्रिका

खंड -1 अंक – 4 वर्ष – 2020

कॉफ़ी !!! अपने मस्तिष्क के लिए तरल जप्पी
Coffee!!! A Liquid Hug for your Brain

कॉफ़ी बोर्ड
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय
नं.1, डॉ. बी.आर.अंबेडकर वीथी, बेंगलूरु-560 001.

अण्णामलैस | अरकुवैली | बाबाबुडानगिरीस | बिलिगिरीस | ब्रह्मपुत्रा

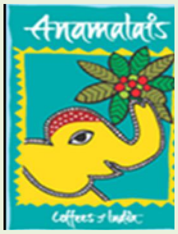

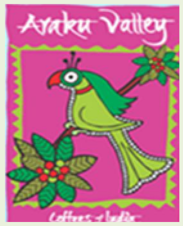

वयनाड

चिकमगलूर

भारत की कॉफ़ियाँ

ट्रावनकूर

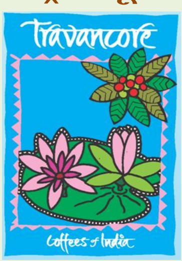

कूर्ग

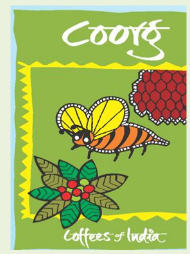

शेवरॉइस

मंजराबाद

पलनीस | रोबस्टा कापी रोयाल | मानसूंड मलबार | मैसूर नग्गेट्स | नीलगिरीस

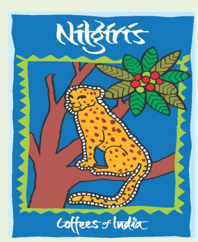

कॉफ़ी बोर्ड
राजभाषा स्कंध, बेंगलूरु
ई-मेल- cbolwing@gmail.com

अंकुर

राजभाषा के लिए समर्पित गृह पत्रिका

खंड-1 अंक-4 वर्ष - 2020

संरक्षक

श्री . एन. एन. नरेंद्रा

वित्त निदेशक, कॉफ़ी बोर्ड

मुख्य संपादक

श्री. एन. एन. नरेंद्रा

वित्त निदेशक, कॉफ़ी बोर्ड

संपादक

ए. पी. अनंत कुमार

संयुक्त निदेशक (प्रशा)

[प्रभारी उप निदेशक (राभा)]

सहयोगी संपादक

सुश्री उषा

श्री सी. मादप्पा

श्रीमती अनुश्री.पी.एस.

इस पत्रिका में अभिव्यक्त विचार एवं अभिमत से कॉफ़ी बोर्ड का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

यह अंक केवल बोर्ड के आंतरिक परिचालन के लिए है, बिक्री के लिए नहीं है|

THIS ISSUE IS ONLY FOR INTERNAL CIRCULATION OF THE BOARD, NOT FOR SALE.

आंतरिक पन्नों पर

सचिव की कलम से

मुख्य संपादक की कलम से

संपादकीय

राजभाषा सुमन

कॉफ़ी बोर्ड के राजभाषा कार्यान्वयन पर एक रिपोर्ट

अंतर्-कार्यालयीन राजभाषा लिखित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता–2019

हिंदी पखवाड़ा समारोह – 2019

सीसीआरआई में आयोजित विशेष हिंदी कार्यशाला

महात्मा गांधीजी की 150वीं जयंती पर विशेष समारोह

संविधान दिवस समारोह

विशेष हिंदी कार्यशाला

कविता कुंज

मैं और मेरी कॉफ़ी बगिया

कहर कोरोना का

सुबह की सफ़र

निबंध सौरभ

अंतरिक्ष परी-कल्पना चावला

कोरोना से बचाने के उपाय

यक्षगान – कर्नाटक का अलौकिक लोक नृत्य

चित्र चारुता

भाषा विविधा

ಕಾಫಿ ಬೋರ್ಡ್

ವಾಣಿಜ್ಯ ಮತ್ತು ಕೈಗಾರಿಕೆ ಸಚಿವಾಲಯ

ಡಾ. ಬಿ. ಆರ್. ಅಂಬೇಡ್ಕರ್ ವೀಧಿ

ಬೆಂಗಳೂರು - 560 001

कॉफ़ी बोर्ड

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

डॉ. बी. आर. अंबेडकर वीथी,

बेंगलूरु – 560 001

COFFEE BOARD

Ministry of Commerce & Industry

Dr. B. R. Ambedkar Veedhi,

Bengaluru -560 001

Website www.indiacoffee.org

कॉफ़ी बोर्ड के उप - कार्यालयों में संपन्न हिंदी दिवस समारोहों पर एक नज़र

श्री. एन. एन. नरेंद्रा
वित्त निदेशक, कॉफ़ी बोर्ड

मुख्य संपादक की तर्जनी से.......................

प्रिय सहकर्मियों,

पत्रिका देश की चतुर्थ स्तंभ मानी जाती है, जो देश की वर्तमान स्थिति, परिस्थिति एवं काल के साथ नई सोच, अनुभूति एवं कल्पनाओं को नया आयाम प्रदान करती है। प्रत्येक व्यक्ति भाषा के माध्यम से दूसरे के साथ जुड़ता है तथा अपनी भावनाओं का संप्रेषण करता है। जब संप्रेषण का माध्यम अपनी मातृभाषा, संपर्क भाषा एवं राजभाषा का रूप धारण कर लेता है, तब अभिव्यक्ति, कल्पना एवं रचनापरकता का मार्ग अत्यधिक प्रखर हो जाता है। किसी भी कार्यालय की गृह-पत्रिका उस कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों की सृजनात्मक क्षमता प्रकट करने का सशक्त माध्यम है। राजभाषा विभाग के सतत प्रयासों के द्वारा सरकारी कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

इस पत्रिका के प्रकाशन द्वारा बोर्ड के मुख्य कार्यालय एवं देश के विभिन्न भागों में स्थित उप-कार्यालयों के राजभाषा कार्यान्वयन में अवश्य प्रगति प्राप्त होगी । इस पत्रिका में बोर्ड के विभिन्न कार्यालयों के कार्मिकों की साहित्यक व कलात्मक रचनाएँ सम्मिलित हैं। इसके साथ-साथ उन्हें हिंदी में ही नहीं अपनी मातृभाषा में भी अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त हो रहा है ।

'अंकुर' पत्रिका को साकार करने हेतु इसके संपादन एवं लेखन कार्य से जुड़े सभी कार्मिक व रचनाकारों को हार्दिक बधाई देना चाहता हूँ ।

मुझे पूरा विश्वास है कि इस पत्रिका को आप सभी के प्यार एवं सराहना प्राप्त होगी।

(एन. एन. नरेंद्रा)

सीसीआरआई में आयोजित हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह की झलकियाँ

श्री ए. पी. अनंतकुमार , सं.नि.(वि/प्रशा) एवं
उप निदेशक (रा.भा) -प्रभारी , कॉफ़ी बोर्ड

संपादकीय

प्रिय साथियों,

अत्यंत प्रसन्नता के साथ यह सूचित किया जा रहा है कि कॉफ़ी बोर्ड की गृह-पत्रिका 'अंकुर' का चतुर्थ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है । वर्तमान युग में, राजभाषा हिंदी भी नव नूतन सूचना प्रौद्योगिकी की सुविधाओं के साथ प्रगति की ओर अग्रसर हो रही है। राजभाषा के प्रगतिशील कार्यान्वयन के साथ कॉफ़ी बोर्ड के मुख्य कार्यालय एवं देश के विभिन्न क्षेत्रों पर स्थित उप-कार्यालयों के कार्मिकों की सृजनात्मक प्रतिभा प्रकट करने के लिए एक मंच प्रदान करना इस पत्रिका के प्रकाशन का मुख्य ध्येय है।

राजभाषा हिंदी से संबंधित कार्य-योजना तथा विभिन्न कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करना राजभाषा से संबंधित गृह-पत्रिका का उद्देश्य है। इस पत्रिका के माध्यम से कॉफ़ी बोर्ड के मुख्य कार्यालय तथा उप-कार्यालयों के कार्मिकों की साहित्यक व कलात्मक रचनाओं के साथ-साथ अन्य रचनाकारों की रचनाएँ प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित भाषाओं का विकास भी सरकार का दायित्व है। इसलिए राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी गृह-पत्रिकाओं में अन्य भारतीय भाषाओं को सम्मिलित करने का निदेश दिया गया है। इसलिए, पत्रिका में दक्षिण भारतीय भाषाओं की रचनाएँ भी सम्मिलित हैं।

इस गृह-पत्रिका को साकार बनाने के लिए रचनाओं द्वारा अपना योगदान देने वाले सज्जन तथा संदर्भोचित सुझाव प्रदान करने वाले वरिष्ठ अधिकारी गण एवं अन्य सहयोग प्रदत्त रचनाकारों एवं राजभाषा स्कंध के सहयोगियों को अपना आभार प्रकट करना चाहता हूँ।

मुझे पूरी उम्मीद है कि यह 'अंकुर' आगे भी फल-फूलकर कॉफ़ी बोर्ड के विभिन्न कार्यालयों में राजभाषा हिंदी को प्रगामी प्रयोग की दिशा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

सादर, सधन्यवाद।

अनंत कुमार
(ए. पी. अनंत कुमार)

उप - कार्यालयों में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ

राजभाषा सुमन

" हिंदी के ऊपर आघात पहुँचाना हमारे प्राणधर्म पर आघात पहुँचाना है।"

जगन्नाथ प्रसाद मिश्र

अंकुर पत्रिका के तीसरे अंक के प्रकाशन की झलकियाँ

वर्ष 2019-20 के दौरान कॉफ़ी बोर्ड के राजभाषा कार्यान्वयन पर एक नज़र

- वर्ष 2019-20 के दौरान राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार निर्धारित लक्ष्य प्राप्त किया।
- राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3) के अधीन 10,773 दस्तावेज जारी किए गए एवं नियम 5 का अनुपालन किया गया, मूल पत्राचार के अधीन 60% व टिप्पण में 30% का लक्ष्य प्राप्त किया है।
- बोर्ड की वार्षिक व लेखा-परीक्षा रिपोर्ट, सूचना अधिकार अधिनियम संबंधी पत्राचार तथा विभिन्न संसदीय समितियों व स्थाई समितियों की रिपोर्ट एवं प्रश्नावली से संबंधित अनुवाद कार्य यथासमय पूरा कर दिया।
- बोर्ड के मुख्य कार्यालय में प्रत्येक तिमाही के दौरान मुख्य कार्यालय के अधिकारियों / कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, इसमें अतिथि वक्ताओं को आमंत्रित करते हुए राजभाषा नीति नियम, तिमाही प्रगति रिपोर्ट तैयार करना, हिंदी टाईपिंग, हिंदी साफ़्टवेयर आदि विषयों पर व्याख्यान आयोजित किए गए। इन कार्यशालाओं में कुल 97 अधिकारियों/ कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया। वर्ष के दौरान, मुख्य कार्यालय के विभिन्न अनुभागों/ एककों के राजभाषा निरीक्षण भी किए गए। इसके अलावा, देश के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित बोर्ड के उप-कार्यालयों में राजभाषा निरीक्षण व हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया । इस अनुक्रम में, संयुक्त निदेशक (वि), गुवाहाटी, का कार्यालय व आरसीआरएस दिफु; सीसीआरआई; आर सी आर एस, थांडिगुडी; उप निदेशक (वि) का कार्यालय, कोयंबत्तूर; ऊतक संवर्धन केंद्र, मैसूरू; सी आर एस एस, चेट्टल्ली; उप निदेशक (वि) का कार्यालय, मड़िकेरी एवं विराजपेट; संयुक्त निदेशक (वि) व उप निदेशक (वि) के कार्यालय, हासन; आर सी आर एस, चुंडेल; संयुक्त निदेशक (वि) व उप निदेशक (वि) के कार्यालय, कल्पेट्टा; संयुक्त निदेशक (वि) का कार्यालय, विशाखपट्टनम व उप निदेशक (वि) का कार्यालय, पाड़ेरु/ व.सं.अ का कार्यालय, मिनिमुल्लूरू एवं आरसीआरएस, नरसीपट्टनम में क्रमश: 09.05.2019 व 10.05.2019; 26.06.2019, 11.07.2019, 08.08.2019, व 09.08.2019, 30.01.2020, व 31.01.2020, 24.02.2020, 25.02.2020 व 26.02.2020; 11.03.2020, 12.03.2020, व 13.03.2020 हिंदी कार्यशालाएँ व निरीक्षण आयोजित किए गए। इन कार्यशालाओं में कुल 180 अधिकारियों/ कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया तथा राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन एवं प्रगामी प्रयोग हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।
- प्रत्येक तिमाही के दौरान, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों का आयोजन किया गया तथा वाणिज्य विभाग, राजभाषा विभाग एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-2) को नियमानुसार तिमाही रिपोर्टों का अग्रेषण व ऑनलाइन प्रेषण आदि किया गया है।
- बोर्ड द्वारा हिंदी में अपना मूल कार्य करने वाले अधिकारियों/ कर्मचारियों के लिए क्रियान्वित विशेष प्रोत्साहन योजना इस वर्ष भी जारी रखा। इस योजना के अनुसार, बोर्ड के किसी भी अधिकारियों/ कर्मचारियों के द्वारा फ़ाइल/ रजिस्टर/ कंप्यूटर पर अपना मूल कार्य करने पर प्रत्येक वर्ष के दौरान 5000 शब्द के लिए `5000/- की राशि पाने के लिए पात्र होते हैं। संबंधित वर्ष के दौरान 10 अधिकारियों/ कर्मचारियों ने इस योजना में भाग लिया।
- बोर्ड के मुख्य कार्यालय में महात्मा गाँधीजी की 150वीं जयंती के संबंध में क्रियान्वित कार्य-योजना के अनुसार, दिनांक **24.04.2019** को "**महात्मा गाँधी : विश्व शांति एवं समभाव प्रचारक**" व्याख्यान आयोजित किया गया था। श्री जी. बी. शिवराजु, अध्यक्ष, गाँधी शांति प्रतिष्ठान, बेंगलूरू को व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किया गया था।

- नराकास (कार्यालय-2), बेंगलूरु के तत्वावधान में अपने सदस्य कार्यालयों के लिए आयोजित संयुक्त हिंदी दिवस समारोह के अंतर्गत कॉफ़ी बोर्ड के मुख्य कार्यालय में दिनांक **18.10.2019** को "**अंतर-विभागीय राजभाषा लिखित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता**" का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु बेंगलूरु स्थित 13 सदस्य कार्यालयों में से 18 प्रतिभागी उपस्थित हुए।
- राजभाषा स्कंध, मुख्य कार्यालय, बेंगलूरु के उप निदेशक व वरिष्ठ अधिकारी, दिनांक **05.08.2019** व **21.01.2020** को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-2), बेंगलूरु की दोनों **अर्ध-वार्षिक बैठकों** में उपस्थित हुए।
- मुख्य कार्यालय, बेंगलूरु के राजभाषा स्कंध के वरिष्ठ अधिकारी, नराकास (कार्यालय-2), बेंगलूरु के तत्वावधान में दिनांक **18.12.2019, बुधवार** को अपराह्न 3बजे **केंद्रीय विनिर्माणकारी प्रौद्योगिकी संस्थान** (सीएमटीआई), तुमकूर रोड, येश्वंतपुर औद्योगिक क्षेत्र, फेस -1, यश्वंतपुर, बेंगलूरु, कर्नाटक - 560022 में आयोजित **संयुक्त हिंदी दिवस - पुरस्कार वितरण समारोह - 2019** में उपस्थित हुए।
- पुनरीक्षण वर्ष के दौरान मुख्य कार्यालय के अनुभाग व उप-कार्यालयों के लिए राजभाषा कार्यान्वयन में उत्तम निष्पादन हेतु "**राजभाषा कीर्ति पुरस्कार**" क्रियान्वित किया गया। मूल्यांकन समिति के निर्णय के अनुसार, मुख्य कार्यालय के उ.नि (बा.अ) का अनुभाग, निर्यात अनुभाग, एवं प्रोन्नयन एकक को तथा उप-कार्यालयों में संयुक्त निदेशक (वि.) का कार्यालय, हासन; सीसीआरआई एवं आरसीआरएस, चुंडेल को क्रमश: प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- 1 अक्तूबर 2019 को हिंदी वार्षिक गृह-पत्रिका **"अंकुर"** का तीसरा अंक विमोचित किया गया।
- मार्च माह के दौरान, मुख्य कार्यालय के प्रवेश द्वार के समीपस्थ डिजिटल एल. ई. डी प्रदर्शन बोर्ड संस्थापित किया गया है, जिसमें हर दिवस द्विभाषी शब्द या वाक्य प्रदर्शित किए जा रहे हैं।
- संयुक्त नराकास, बेंगलूरु द्वारा दिनांक **05.03.2020** को राष्ट्रकवि कुवेंपु कलाक्षेत्र, बी.ई.एल कैंपस, जालहल्ली, बेंगलूरु में आयोजित **एक दिवसीय राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम एवं कवि सम्मेलन** में राजभाषा स्कंध, मुख्य कार्यालय, बेंगलूरु के उप निदेशक व दो अधिकारी उपस्थित हुए।

****

निज भाषा

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
बिनु निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥
करहु बिलंब न भ्रात अब, उठहु मिटबहु सूल ।
निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जो सबको मूल ॥
बिबिध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार ।
सब देसन से लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि जत्न ।
राज काज दरबार में, फैलावहु यह रत्न ॥

- भारतेन्दु हरिश्चंद्र

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने हिंदी की उन्नति पर अपने कविता रूप में प्रस्तुत व्याख्यान में कहा था -

मातृभाषा का उपयोग सभी प्रकार की शिक्षा के लिए करना है। निज यानी अपनी भाषा से ही उन्नति संभव है, क्योंकि सारी उन्नतियों का मूलाधार यही है। मातृभाषा के ज्ञान के बिना हृदय की पीड़ाओं का निवारण संभव नहीं है।

हे भाइयों अब उठो, देर मत करो। अपना कांटा दूर करो। सबसे पहले अपनी भाषा की उन्नति करो। यह सब चीज़ों की उन्नति की जड़ है।

विभिन्न प्रकार की कलाएं, असीमित शिक्षा और अनेक प्रकार का ज्ञान, सभी देशों से भले ही ले लें, मगर उनका प्रचार मातृभाषा में ही करना चाहिए।

इस पंक्ति द्वारा, कवि ने सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग करने के लिए कहा है। यत्न करके सारे संसार में अपनी भाषा का प्रयोग प्रचलित कर दो। यह रत्न सरकारी कामकाज में फैला दो।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का यह व्याख्यान आज और अधिक प्रासंगिक है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी की 150वीं जयंती के अवसर पर विभिन्न समारोह – एक रिपोर्ट

"महात्मा गाँधी : विश्व शांति एवं समभाव प्रचारक" – विशेष वक्तव्य

बेंगलूरु स्थित कॉफ़ी बोर्ड के मुख्य कार्यालय में 02.10.2018 से 02.10.2019 तक आयोजित राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में दि. 24.04.2019 को दोपहर 03.00 बजे मुख्य कार्यालय के नीलामी कक्ष में "**महात्मा गांधी : विश्व शांति एवं समभाव प्रचारक**" विषय पर कन्नड़ भाषा में वक्तव्य आयोजित किया गया था।

ईश-वंदना के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। उसके बाद महात्मा गांधी जी पर लघु फिल्म का प्रदर्शन किया गया। तदुपरांत, श्रीमती पी. एस. अनुश्री, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, राजभाषा स्कंध ने मंचासीन कॉफ़ी बोर्ड के वित्त निदेशक व अनुसंधान निदेशक तथा विशिष्ट अतिथि श्री जी. बी. शिवराजू, अध्यक्ष, गांधी शांति प्रतिष्ठान, बेंगलूरु का स्वागत किया। उसके बाद श्री सी. मादप्पा, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, राजभाषा स्कंध ने सभा को अतिथि वक्ता का संक्षिप्त परिचय करवाया।

विशिष्ट अतिथि प्राचार्य जी. बी. शिवराजू ने अपने बहुमूल्य वक्तव्य के दौरान, महात्मा गांधीजी के जीवन के विविध पहलुओं जैसे उनके बचपन, शिक्षा, संपूर्ण भारत पर प्रभावित सत्याग्रह-नीति, जिसकी शुरुआत दक्षिण अफ्रीका से हुई थी। गाँधीजी के सादा जीवन उच्च विचार के बारे में बताते हुए सत्य, अहिंसा, सरल जीवन, सहिष्णुता, उपवास, असहयोग आंदोलन एवं दंडी सत्याग्रह जैसे उनके जीवन के आदर्श तत्वों पर प्रकाश डाला। वक्ता ने इस बात की ओर भी सभा का ध्यान आकर्षित किया कि हिटलर, मार्टिन लूथर किंग, नेल्सन मंडेला एवं अमेरिका के राष्ट्रपति ओबामा जैसे विश्व के महान व्यक्तित्व भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीजी से अत्यंत प्रभावित थे। उन्होंने यह भी बताया कि आगामी पीढ़ी को बापूजी के द्वारा अपनाए गए जीवन मूल्य एवं उनके आदर्शों का पालन करना चाहिए। श्रीमती पी. एस. अनुश्री, कहिंअ के धन्यवाद ज्ञापन एवं राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

“गाँधीजी के विचारों पर” – निबंध लेखन प्रतियोगिता :

कॉफ़ी बोर्ड के मुख्य कार्यालय एवं उप-कार्यालय के अधिकारियों/ कर्मचारियों के लिए अगस्त 2019 माह के दौरान, महात्मा गांधीजी की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में कन्नड़/ हिंदी/ अंग्रेज़ी निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में कन्नड़ भाषा में एक, हिंदी में तीन तथा अंग्रेज़ी में छः निबंध (कुल 10) प्राप्त हुए। बेंगलूरु शहर के एक विशेषज्ञ (बाह्य) के द्वारा निबंधों का मूल्यांकन किया गया। प्रतिभागियों को प्रोत्साहित करने हेतु प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार के देने का निर्णय लिया गया। दिनांक **16.09.2019** को आयोजित हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह के दौरान पुरस्कार विजेताओं को स्मृति-चिह्न एवं प्रमाण-पत्रों से सम्मानित किया गया।

“आधुनिक जीवन पर महात्मा गांधी के सिद्धांतों का प्रभाव” – विशेष वक्तव्य :

बेंगलूरु स्थित कॉफ़ी बोर्ड के मुख्य कार्यालय में दि. 02.10.2018 से 02.10.2019 तक आयोजित राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीजी की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में दि. 01.10.2019 को अपराह्न 03.00 बजे मुख्य कार्यालय के नीलामी कक्ष में “**आधुनिक जीवन पर महात्मा गांधी के सिद्धांतों का प्रभाव**” विषय पर कन्नड़ भाषा में वक्तव्य आयोजित किया गया।

ईश-वंदना के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। उसके बाद महात्मा गाँधीजी के जीवन-वृत्त तथा प्लास्टिक प्रदूषण (कन्नड़ में) पर दो लघु फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। तदुपरांत, श्री सी. मादप्पा, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, राजभाषा स्कंध ने मंचासीन कॉफ़ी बोर्ड के वरिष्ठ सलाहकार डॉ. वाई. रघुरामुलु एवं श्री ए. पी. अनंत कुमार, संयुक्त निदेशक (वि./प्रशा.) तथा विशिष्ट अतिथि डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर प्रेमी, प्राचार्य (सेवानिवृत्त), बेंगलूरु विश्वविद्यालय का स्वागत किया तथा उसके बाद सभागार को अतिथि वक्ता का संक्षिप्त परिचय करवाया।

विशिष्ट अतिथि डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर प्रेमी ने अपने दिलचस्प एवं बहुमूल्य उद्बोधन के दौरान, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीजी के संपूर्ण जीवन पर प्रकाश डालते हुए गाँधी जी के तीन महत्वपूर्ण सिद्धांत - सत्य, अहिंसा व सेवा पर विस्तृत जानकारी देते हुए अनुरोध किया कि उनके आदर्शों को आत्मसात करें। उन्होंने यह भी बताया कि आधुनिक जीवन पर बापू के ये सिद्धांत कैसे प्रभावित हो रहे हैं।

इस कार्यक्रम के दौरान बोर्ड की वार्षिक गृह पत्रिका **‘अंकुर’** का विमोचन भी किया गया तथा श्री जगदीश. आर., वरिष्ठ सहायक, इंडिया कॉफ़ी अनुभाग के धन्यवाद ज्ञापन एवं राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। श्री सी. मादप्पा, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, राजभाषा स्कंध ने मंच संचालन किया।

कॉफ़ी बोर्ड के मुख्य कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन

कॉफ़ी बोर्ड के मुख्य कार्यालय में दिनांक 01.09.2019 से 14.09.2019 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। हिंदी पखवाड़े के दौरान, कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं । 16 सितंबर 2019 को अपराह्न 03.30 बजे हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में, डॉ. मैथिली पी. राव, संकायाध्यक्ष, भाषा विभाग, जैन विश्वविद्यालय, बेंगलूरु पधारी थीं। कार्यालय के वित्त निदेशक श्री एन. एन. नरेन्द्रा, आई ओ एफ़ एस, ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। संयुक्त निदेशक (वि/प्रशा.) श्री ए. पी. अनंत कुमार भी मंच पर उपस्थित थे ।

मंचासीन विशिष्ट अतिथि एवं अधिकारी गण के करकमलों से दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। राजभाषा स्कंध के उप निदेशक श्री. एम. पी. दामोदरन ने ईश-वंदना प्रस्तुत की । सुश्री उषा, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने मंच पर उपस्थित विशिष्ट अतिथि, उच्च अधिकारियों तथा सभागार में उपस्थित अधिकारियों व कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत किया । तत्पश्चात श्री. मादप्पा, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने माननीय गृह मंत्रिजी के संदेश वाचन किया । राजभाषा स्कंध के उप निदेशक श्री. एम. पी. दामोदरन द्वारा बोर्ड के राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित रिपोर्ट प्रस्तुत की गई । सुश्री उषा, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने वाणिज्य विभाग के सचिव के संदेश वाचन किया । श्रीमती अनुश्री, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने मुख्य अतिथि का संक्षिप्त परिचय दिया ।

विशिष्ट अतिथि, वित्त निदेशक एवं संयुक्त निदेशक (वि/प्रशा.) के करकमलों द्वारा हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र वितरित किए गए । आगे, कॉफ़ी बोर्ड में वित्तीय वर्ष 2018-19 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन क्षेत्र में उत्तम निष्पादन के लिए आयोजित शील्ड एवं प्रमाण-पत्रों का वितरण किया गया तथा राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीजी की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित कन्नड़/ हिंदी/ अंग्रेज़ी निबंध प्रतियोगिता के पुरस्कार भी प्रदान किया गया । इस अवसर पर, बोर्ड की वार्षिक गृह पत्रिका 'अंकुर' के लिए अपना योगदान प्रदान करने वाले रचनाकारों को स्मृति चिह्न से सम्मानित किया गया । आदरणीय विशिष्ट अतिथि डॉ. मैथिली पी. राव ने अपने उद्बोधन में, राजभाषा हिंदी के महत्व एवं राष्ट्रीय अस्मिता को बनाए रखने के लिए हिंदी का अधिकारिक प्रयोग करने पर ज़ोर दिया, उन्होंने बोर्ड में राजभाषा के प्रगतिशील कार्यान्वयन के लिए सराहना की । बोर्ड के वित्त निदेशक, अपने अध्यक्षीय भाषण में भाषा के महत्व एवं राजभाषा कार्यान्वयन पर प्रकाश डालते हुए कार्यालयीन भाषा में सरल हिंदी के प्रयोग करने का अनुरोध किया । तदुपरांत, श्री मादप्पा, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक के धन्यवाद ज्ञापन एवं राष्ट्रगान के साथ समारोह सफलतापूर्वक संपन्न हुआ ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-2) के तत्वावधान में अंतर-कार्यालयीन राजभाषा लिखित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता - एक नज़र

नराकास (कार्यालय-2), बेंगलूरु के तत्वावधान में सदस्य कार्यालयों के लिए संयुक्त हिंदी दिवस समारोह के अंतर्गत कॉफ़ी बोर्ड के मुख्य कार्यालय में दिनांक 18.10.2019 को **"राजभाषा पर लिखित प्रश्नोत्तरी" अंतर-कार्यालयीन प्रतियोगिता** आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु बेंगलूरू स्थित 13 विभिन्न सदस्य कार्यालयों में से 18 प्रतिभागी उपस्थित थे।

इस प्रतियोगिता का **प्रथम पुरस्कार -** महा प्रबंधक (पी ए एफ) का कार्यालय, कर्नाटक परिमंडल, के **श्रीमती आई. अस्वती,** सहायक लेखा अधिकारी ने प्राप्त किया, **द्वितीय पुरस्कार -** महा प्रबंधक का कार्यालय, रेल पहिया कारखाना, बेंगलूरु के **श्रीमती दीपा विनोद कुमार,** कार्यालय अधीक्षक, ने प्राप्त किया और **तृतीय पुरस्कार -** एम.एस.एम.ई विकास संस्थान, राजाजी नगर औद्योगिक संपदा, बेंगलूरु, के **श्री विदित विष्नोई,** अवर श्रेणी लिपिक, ने प्राप्त किया।

प्रतियोगिता के तीन प्रोत्साहन पुरस्कार क्रमशः **श्रीमती एस.आर अहिल्या बाई, निरीक्षक/आशुलिपिक,** पुलिस महा निरीक्षक का कार्यालय, कर्नाटक - केरल सेक्टर, के.रि.पु.बल, यलहंका; **श्रीमती स्मिता दत्ता, आयकर निरीक्षक**, प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त का कार्यालय, बेंगलूरु; **सुश्री अंकिता शर्मा, कर सहायक,** सीमा शुल्क मुख्य आयुक्त का कार्यालय, बेंगलूरु अंचल, ने प्राप्त किए हैं । दिनांक 18.12.2019 बुधवार को अपराह्न 3 बजे केंद्रीय विनिर्माणकारी प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएमटीआई), तुमकूर रोड, यश्वंतपुर औद्योगिक क्षेत्र, फेस -1, यश्वंतपुर, बेंगलूरु, कर्नाटक - 560022 में आयोजित संयुक्त हिंदी दिवस - पुरस्कार वितरण समारोह - 2019 में पुरस्कार विजेताओं को विशिष्ट अतिथियों के करकमलों द्वारा पुरस्कार एवं प्रमाणपत्रों से सम्मानित किया गया।

****

क्या आप जानते हैं?

विश्व का सर्वप्रथम कॉफ़ी हाउस सन् 1475 में कॉन्स्टेंटिनोपाल में खुला था । अब यह स्थान इस्तांबुल के नाम से जाना जाता है ।

सीसीआरआई में विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 26 जून 2019 को सीसीआरआई में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। विशिष्ट गणमान्य व्यक्तियों के करकमलों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ पारंपरिक रूप से कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। कार्यालय के डॉ. श्रुति अ.सहा., एवं श्रीमती उमा, सहायक विशेषज्ञ ने ईश-वंदना की। श्री एस. डी. जोशी, विस्तारण निरीक्षक व हिंदी अनुभाग (प्रभारी) ने सबका स्वागत किया।

संस्थान के अनुसंधान निदेशक डॉ. वाई. रघुरामुलु जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण के दौरान, सर्वप्रथम बेंगलूरु शहर से पधारे हुए अतिथि वक्ताओं का हार्दिक अभिनंदन किया। भारतीय संविधान में राजभाषा हिंदी का महत्व उल्लेख करते हुए संस्थान के अधिकारियों / कर्मचारियों को अपने दैनिक कार्यालयीन कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहन किया।

श्री एम. पी. दामोदरन, उप निदेशक (राजभाषा), मुख्य कार्यालय, कॉफ़ी बोर्ड, बेंगलूरु ने मूल कार्य हिंदी में करने हेतु कार्यान्वित प्रोत्साहन योजना के बारे में अवगत कराया तथा सीसीआरआई कर्मचारियों और वैज्ञानिकों से हिंदी में मूल कार्य करने का अनुरोध किया। उन्होंने सीसीआरआई में, नियमित रूप से प्रत्येक तिमाही के दौरान हिंदी कार्यशाला का आयोजन करने हेतु अनुरोध किया।

श्री डी. एस. मुखारिब, अनुसंधान सहायक ने अतिथि वक्ताओं का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र के दौरान, डॉ. शंकर प्रसाद, उप महा प्रबंधक (रा.भा), एचएएल, बेंगलूरु ने `राजभाषा नीति, अधिनियम, नियम एवं संवैधानिक प्रावधान' के बारे में व्याख्यान दिया। उन्होंने सरल व संक्षिप्त रूप में राजभाषा हिंदी की संवैधानिक यात्रा की जानकारी प्रदान की। द्वितीय सत्र में डॉ. जी. आर. चौधरी, वरिष्ठ रा.भा. सहायक, डेयर, डीआरडीओ, बेंगलूरु ने "राजभाषा प्रोन्नयन में सूचना प्रौद्योगिकी का योगदान" पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति दी। उन्होंने सूचना प्रौद्योगिकी से संबद्ध अद्यतन कार्यक्रमों के माध्यम से राजभाषा का प्रोन्नयन पर संक्षिप्त जानकारी देते हुए है राजभाषा से संबंधित विभिन्न सॉफ्टवेयरों के बारे में अवगत कराया । अंत में डॉ. मोठे किशोर जालंधर, अनुसंधान सहायक के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन हुआ। राष्ट्रगीत के साथ कार्यशाला संपन्न हुई।

भारतीय संविधान की 70वीं समारोह पर कॉफ़ी बोर्ड के मुख्य कार्यालय में संविधान दिवस का आयोजन

26 नवंबर 2019 से 26 नवंबर 2020 तक आयोजित भारतीय संविधान की 70वीं समारोह के उपलक्ष्य में कॉफ़ी बोर्ड की कार्य-योजना के अनुसार, दिनांक 28.01.2020 को बोर्ड के मुख्य कार्यालय में भारतीय संविधन की प्रस्तावना एवं मौलिक कर्तव्यों पर व्याख्यान एवं संविधान पर वृत्तचित्र प्रदर्शन आयोजित किया गया है। इस कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि के रूप में, श्री जया नायक, विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान, बीईएल कॉलेज, बेंगलूरु को आमंत्रित किया गया था।

कार्यक्रम के अवसर पर विशिष्ट अतिथि के साथ बोर्ड के वरिष्ठ सलाहकार डॉ. वाई. रघुरामुलु, श्री ए. पी. अनंत कुमार, संयुक्त निदेशक (वि/प्रशा.) एवं श्री नागेंद्रा, सलाहकार (प्रशासन) ने अपनी उपस्थिति द्वारा मंच की शोभा बढ़ाई। संविधान गीत के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तदुपरांत, राजभाषा स्कंध के श्रीमती अनुश्री पी. एस., कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने सबका स्वागत किया तथा सभा को विशिष्ट अतिथि का परिचय करवाया।

अतिथि वक्ता श्री जया नायक ने इस संसार के सबसे बड़े लिखित, नवनिर्मित एवं सर्वाधिक परिचर्चित भारतीय संविधान की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए उसके सृजनकर्ता गण, सृजन के कारण, उसकी महत्ता तथा नागरिकों के मूलभूत अधिकार एवं कर्तव्यों के बारे में मनोरंजक उदाहरणों के साथ विस्तृत जानकारी प्रदान की, जिससे उपस्थित श्रोता-गण अत्यंत प्रभावित हुए। कन्नड भाषा के नाटक क्षेत्र में जुड़े होने से, उन्होंने अपनी अभिनय प्रतिभा की कुछ झलकियाँ प्रदर्शन की, सभा ने करतल ध्वनियों से सहर्ष अभिनंदन किया।

आगे, भारतीय संविधान पर लोकसभा टीवी द्वारा निर्मित "संविधान" नामक वृत्तचित्र का एक भाग प्रदर्शित किया गया।

राजभाषा स्कंध के श्री सी.मादप्पा, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक के धन्यवाद ज्ञापन किया। राष्ट्र गीत के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ। राजभाषा स्कंध के सुश्री उषा, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने मंच संचालन किया।

कॉफ़ी बोर्ड के मुख्य कार्यालय में आयोजित "हिंदी सॉफ़्टवेयर" विषय पर हिंदी व्याख्यान की संक्षिप्त रिपोर्ट

दिनांक 10.03.2020 को कॉफ़ी बोर्ड के मुख्य कार्यालय में, **"हिंदी सॉफ़्टवेयर"** पर हिंदी में व्याख्यान आयोजित किया गया।

उप निदेशक (रा.भा) ने डॉ. माल्तेश मैलार, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, सूक्ष्मतरंग नालिका अनुसंधान विकास केंद्र, डी.आर.डी.ओ, बी.ई.एल फ़ैक्टरी कॉम्प्लेक्स, जालहल्ली, बेंगलुरु, से पधारे हुए वक्ता के स्वागत के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की तथा श्रीमती अनुश्री पी.एस., क.हिं.अ, राजभाषा स्कंध ने अतिथि वक्ता का संक्षिप्त परिचय दिया।

अतिथि वक्ता डॉ. माल्तेश मैलार ने अपने व्याख्यान के दौरान राजभाषा नीति पर प्रकाश डालते हुए सी-डाक एवं एन.आई.सी द्वारा राजभाषा विभाग के लिए विकसित तथा विमोचित नए सॉफ़्टवेयर सहित राजभाषा हिंदी से संबद्ध विभिन्न सॉफ़्टवेयरों के उपयोग का अद्यतन ज्ञान प्रदान किए।

यह व्याख्यान बहुत ही ज्ञानवर्धक एवं रोचक था। मुख्य कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा विकसित विभिन्न नए सॉफ़्टवेयरों के बारे में ज्ञान प्राप्त किया।

सुश्री उषा, क.हिं.अ, राजभाषा स्कंध के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

कविता - कुंज

" कवि का काव्य ही उसकी आत्मा का सत्य है। "

डॉ. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय

मैं और मेरी कॉफ़ी बगिया

बारिश की पहली बूंद मिली तो,
श्वेत हिमों सी ढक गई बगिया ।
सतरंगी के रंगों को समेटे,
श्वेत रंगों से सज गई बगिया ।
पहले जो थी हरी-सी बगिया,
फिर हो गई वो हिम-सी बगिया ।
रोज सुबह मुझे ताज़गी देती,
मनमोहक प्यारी बगिया ।
दोस्त कभी जो घर आएँ,
सबसे मिलती रौनक लाती बगिया ।
साँझ में खुद को तन्हा पाऊँ,
संग मेरे हो जाती बगिया ।
तन्हाई के हर आलम में,
मेरा मन बहलाती बगिया ।

ऑफ़ीस के कामों से थककर, जब भी मैं घर लौटूँ,
थकी-सी पाकर मुझे, मन में ताजगी लाती बगिया ।
छुट्टी में मुझे तन्हा पाकर,
अपनी याद दिलाती बगिया ।
एक पल भले मैं भूल भी जाऊँ,
पर मुझे भूल न पाती बगिया ।
बारिश की जो पहली बूंद मिली तो,
श्वेत रंगों सा हो जाती बगिया ।
तुझे कभी भी भूल न पाऊँ, मेरी प्यारी कॉफ़ी की बगिया ।

श्रीमती स्मिता केरकेट्टा
सहायक विस्तारण अधिकारी
कॉफ़ी बोर्ड, कोरापुट

कहर कोरोना का

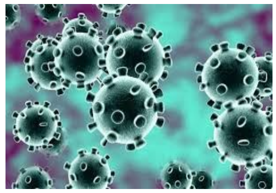

हे ईश्वर ! आ पड़ा है कहर कोरोना
विनती मेरे मालिक तुम मेहर करोना ।

भूल गए थे हम हस्ती तुम्हारी
मालिक संभाल लें अब कश्ती हमारी
अपने बच्चों को अब और सीख मत दो ना
विनती मेरे मालिक तुम मेहर करोना ।

रूह काँप उठती है, आज ऐसी घड़ी है
फिर भी तेरी रहमत की आशा सबसे बड़ी है
हे विधाता ! विधि का यह लेख बदल दो ना
विनती मेरे मालिक तुम मेहर करोना ।

आज हिंदू, मुस्लिम, सिख हो या इसाई
सबकी आंखें करुणा से हैं भर आई
कितना मुश्किल है अपनों से दूर जाना
विनती मेरे मालिक तुम मेहर करोना ।

गाती पंछी, निर्मल नदियाँ, वायु बिन जहर
बरसों के बाद आज देखी ऐसा शहर
साफ खुला आसमाँ कहे अब तो समझोना
विनती मेरे मालिक तुम मेहर करोना ।

प्रकृति की वेदना हम क्यों न सुन पाए
आज अपनों की चीखें हमें यह बताएं
बहुत बड़ा ऋण प्रकृति का है चुकाना
विनती मेरे मालिक तुम मेहर करोना ।

मोल क्या है अपनों का आज तूने सिखाया
घर बंद कर दिल के दरवाजों को खुलवाया
मकसद तेरा था सोए हुए हमें जगाना
विनती मेरे मालिक तुम मेहर करोना ।

नतमस्तक हम देश के उन रखवालों के
खुद को भूल जो लगे हैं लड़ने महामारी से
इनके नाम पर जले दीयों को मत बुझाना
विनती मेरे मालिक तुम मेहर करोना ।

मानते हम हुई भूल हमसे बड़ी है
माफ बच्चों को करना जिम्मेदारी तेरी है
हाथ जोड़े इन बेबस बच्चों को क्षमा दो ना
विनती मेरे मालिक तुम महर करोना

हे ईश्वर ! आ पड़ा है कहर कोरोना
विनती मेरे मालिक तुम मेहर करो ना

रमेश आर पिंपलेकर, सहायक सचिव,
इंडिया कॉफ़ी हाउस/ डिपो, मूख्य कार्यालय,
बेंगलूरू

संसार की सबसे महँगी कॉफ़ी

इस संसार की सबसे अधिक महँगी कॉफ़ी इंडोनेशिया की **"कोपी लुवाक"** या **"सिवेट कॉफ़ी"** है। इस कॉफ़ी के दाने एशियाई किवी नेवले द्वारा खाए जाते हैं। वह इसे अध पचा ही उत्सर्जित कर देता है। यह फलियाँ $ 600 की 1 पाउंड या $ 50 प्रति कप की दर से बिकती हैं।

सुबह की सफर

सुबह-सुबह उठती हूँ मैं
एक नए दिन की शुरुआत के लिए
दिल कहता है फिर सो जा
लेकिन दिमाग कहता है काम पर जा
।

खिड़की खोलूँ तो सुनाई देती है आवाज़
सिर्फ़ ट्रैफिक से भरी सड़क से
लेकिन यह वक्त है सुनहरी
वक्त है एक कप कॉफ़ी की ।

मुझे खींच लेता है कॉफ़ी का सुगंध
पश्चिमी घाट की पर्वत श्रेणी तक
एक घूंट लेती हूँ तो ऐसा लगता है
खड़ी हूँ मैं कॉफ़ी पौधों के बीच ।

बीज से लेकर कप तक
एक स्वादिष्ट सफ़र होती है
काम करने वालों की मेहनत
बूँद-बूँद में बसती है ।

इसलिए मन से आभारी होकर
और जुबान पर स्वाद चककर
मैं दिन की शुरुआत करती हूँ
एक कप गरम कॉफ़ी के साथ ।

डॉ. वसुधा भारद्वाज. जे
आर. जगदीश, व.सहा., इंडियन कॉफ़ी अनुभाग की सुपुत्री

आपके नाम सादर प्रणाम....

सोच तो आपकी होगी, मगर आवाज़ देंगे हम
ख्वाब तो आपने देखा, मगर आगाज़ देंगे हम
विदाई पर हमारी ओर से, उपहार इतना है..
इरादे आपके होंगे, मगर परवाज़ देंगे हम ।

चाहे जितने भी काँटे लगे, वे गुलों के बिछौने हो जाते हैं
मुश्किलों का पहाड़ भी आए, वह हमें बौना हो जाता है
आप तो पारस मणि हैं, जिसे जो भी छू लेता हैं
वह लोहा, लोहा नहीं रहता, सोना बन जाता है ।

अनुश्री. पी. एस, हिंदी अनुवादक (क)

निबंध सौरभ

" यदि आप सच बोलते हैं तो आपको कुछ याद रखने की ज़रूरत नहीं रहती । ".

मार्क ट्वैन

अंतरिक्ष परी - कल्पना चावला

कल्पना चावला अभी भी हमारी यादों में जीवित हैं, जो भारत की प्रथम अंतरिक्ष महिला यात्री थीं। अंतरिक्ष यात्रा करना हम सब के लिए केवल सपना है, परंतु कल्पना चावला ने उसे साकार किया था।

कल्पना चावला ने प्रारंभिक शिक्षा टैगोर पब्लिक स्कूल करनाल से प्राप्त की। आगे की शिक्षा वैमानिक अभियान्त्रिकी में पंजाब इंजिनियरिंग कॉलेज, चंडीगढ़, भारत से करते हुए 1982 में अभियांत्रिकी स्नातक की उपाधि प्राप्त की। वे संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए 1982 में चली गईं और 1984 वैमानिक अभियान्त्रिकी में विज्ञान निष्णात की उपाधि टेक्सास विश्वविद्यालय आर्लिंगटन से प्राप्त की। कल्पना जी ने 1986 में दूसरी विज्ञान निष्णात की उपाधि पाई और 1988 में कोलोराडो विश्वविद्यालय बोल्डर से वैमानिक अभियंत्रिकी में विद्या वाचस्पति की उपाधि पाई। कल्पना जी को हवाईजहाज़ों, ग्लाइडरों व व्यावसायिक विमानचालन के लाइसेंसों के लिए प्रमाणित उड़ान प्रशिक्षक का दर्ज़ा हासिल था। उन्हें एकल व बहु इंजन वायुयानों के लिए व्यावसायिक विमानचालक के लाइसेंस भी प्राप्त थे। अन्तरिक्ष यात्री बनने से पहले वो एक सुप्रसिद्ध नासा कि वैज्ञानिक थी।

कल्पना जी मार्च 1995 में नासा के अंतरिक्ष यात्री कोर में शामिल हुईं और उन्हें 1998 में अपनी प्रथम उड़ान के लिए चुनी गईं थीं। उनका प्रथम अंतरिक्ष मिशन 19 नवंबर 1997 को छह अंतरिक्ष यात्री दल के हिस्से के रूप में अंतरिक्ष शटल कोलंबिया की उड़ान एसटीएस-87 से शुरू हुआ। कल्पना जी अंतरिक्ष में उड़ने वाली प्रथम भारत में जन्मी महिला थीं और अंतरिक्ष में उड़ाने वाली भारतीय मूल की दूसरी व्यक्ति थीं। राकेश शर्मा ने 1984 में सोवियत अंतरिक्ष यान में एक उड़ान भरी थी। कल्पना जी अपने पहले मिशन में 1.04 करोड़ मील का सफ़र तय करके पृथ्वी की 252 परिक्रमाएँ कीं और अंतरिक्ष में 360 से अधिक घंटे बिताए। एसटीएस-87 के दौरान स्पार्टन उपग्रह को तैनात करने के लिए भी ज़िम्मेदार थीं, इस खराब हुए उपग्रह को पकड़ने के लिए विंस्टन स्कॉट और तकाओ दोई को अंतरिक्ष में चलना पड़ा था। पाँच महीने की तफ़्तीश के बाद नासा ने कल्पना चावला को इस मामले में पूर्णतया दोषमुक्त पाया, त्रुटियाँ तंत्रांश अंतरापृष्ठों व यान कर्मचारियों तथा ज़मीनी नियंत्रकों के लिए परिभाषित विधियों में मिलीं।

एसटीएस-87 की उड़ानोपरांत गतिविधियों के पूरा होने पर कल्पना जी ने अंतरिक्ष यात्री कार्यालय में, तकनीकी पदों पर काम किया, उनके यहाँ के कार्यकलाप को उनके साथियों ने विशेष पुरस्कार देके सम्मानित किया।

1983 में वे एक उड़ान प्रशिक्षक और विमानन लेखक, जीन पियरे हैरीसन से मिलीं और शादी की और 1990 में एक देशीयकृत संयुक्त राज्य अमेरिका की नागरिक बनीं।

16 जनवरी 2003 को कल्पना जी ने अंततः कोलंबिया पर चढ़ के विनाशरत एसटीएस-107 मिशन का आरंभ किया। उनकी ज़िम्मेदारियों में शामिल थे स्पेसहैब/बल्ले-बल्ले/फ़्रीस्टार लघुगुरुत्व प्रयोग जिसके लिए कर्मचारी दल ने 80 प्रयोग किए, जिनके जरिए पृथ्वी व अंतरिक्ष विज्ञान, उन्नत तकनीक विकास व अंतरिक्ष यात्री स्वास्थ्य व सुरक्षा का अध्ययन हुआ।

01 फरवरी, 2003, का वह दुखद दिन कोई कैसे भूल सकता है, जिस दिन कल्पना चावला को अपनी क्र्यू के साथ अंतरिक्ष यान पूरा करते हुए वापस पृथ्वी पर पहुँचने के लिए कैनेडी स्पेस सेंटर पर आकर उतरना था, लेकिन वहाँ पहुँचने से पूर्व स्पेस शटल की दुर्घटनाग्रस्त होकर भयंकर त्रासदी हुई तथा उस दर्दनाक हादसे में कल्पना चावला सहित उस अंतरिक्ष दल के 7 सदस्यों का दुखद निधन हो गया।

भारत की महान सुपुत्री कल्पना चावला को वर्ष 2004 में नासा के विशिष्ट सेवा मेडल, नासा स्पेस फ्लाइट मेडल तथा कांग्रेस के अंतरिक्ष पदक से सम्मानित किया गया था।

तदुपरांत वे केवल हमारी यादों में हैं। एक महान महिला जिसने आकाश को छूकर पृथ्वी को वापस छूने से कुछ मिनट पहले अपने जीवन का बलिदान किया। हम सब भारतावासियों को जरूर कल्पना चावला पर गर्व महसूस होगा, पर उस महान भारतीय महिला के नष्ट का दर्द आज भी सहना पड़ा रहा है। मेरे लिए वे एक आदर्श महीला हैं, क्योंकि भविष्य में मैं भी आकाश को छूना चाहती हूँ। उनके द्वारा छोड़े गए निशानों में आगे बढ़ना ही मेरा लक्ष्य है।

कुमारी स्मृति एस नायर,
श्रीमती अनुश्री. पी. एस की सुपुत्री,
आठवीं कक्षा, बीईएल (सीबीएसई) स्कूल,
बेंगलूरु

****

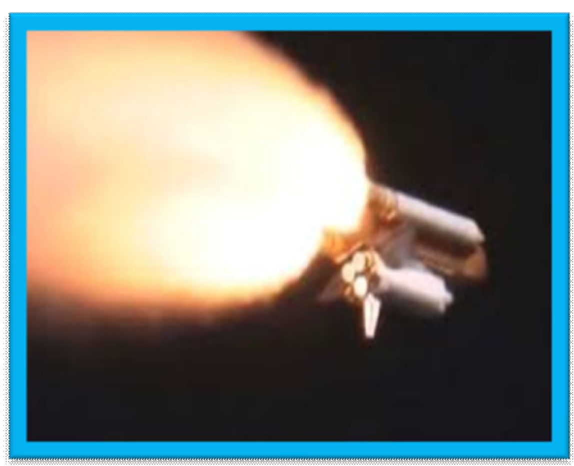

कल्पना चावला एक ऐसी हस्ती हैं जो अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति एवं अपनी उपलब्धियों से इतनी ऊंचाई तक पहुँची थी।

कोरोना से बचने के उपाय

दुनिया भर में कोरोना वायरस अर्थात कोविड़ -19 की कहर जारी है। लाखों की संख्या में लोग इस वाइरस से संक्रमित हैं और हजारों की संख्या में मानव जीवन नष्ट हो चुके हैं। भारत में भी कोरोना वायरस का संक्रमण बढ़ रहा है। चूँकि, अब तक इस वाइरस के संक्रमण के इलाज के लिए किसी भी देश द्वारा किसी भी प्रकार के टीका की खोज नहीं कर पाई है, तब हम क्या करें, इससे बचने के लिए सदैव जागरूक रहने का उपाय ही बचा है ।

अब हमारे शहर का मौसम भी तेजी से बदल रहा है और इस परिवर्ती मौसम में सर्दी-जुकाम एवं सामान्य फ़्लू से परेशान होना भी आम बात है। लेकिन अब इस कोरोना वायरस ने सभी लोगों के मन में डर का माहौल पैदा कर दिया है। हर कोई इस वायरस से बचने के उपाय अपनाना चाहता है, लेकिन डर का माहौल इतना है कि हल्की खांसी या जुकाम में भी लोग दहशत में आ रहे हैं, क्योंकि कोरोना वायरस के लक्षण भी सामान्य सर्दी, नाक बहना, खांसी, बुखार, आदि होने के कारण लोगों के लिए इस बीमारी को पहचानना मुश्किल हो रहा है। ऐसे में बेहद जरूरी है कि इसके बारे में सोचकर डरना या तनावग्रस्त होने की बजाय हम सब जागरुक बनें। इस वायरस के संक्रमण से बचने के लिए, जो आवश्यक उपाय करना है, उससे संबंधित जानकारी प्राप्त करते हुए उसका अनुपालन करें।

कोरोना के संक्रमण से सुरक्षित रहने के उपाय

नियमित अंतराल में हाथ की सफ़ाई

हाथ की सफ़ाई से कोरोना वायरस के संक्रमण से सुरक्षित रहने का सबसे सरल उपाय है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के प्राधिकारी तथा अन्य विख्यात वैज्ञानिक बार-बार यही दोहरा रहे हैं कि कोरोना वायरस से सुरक्षित रहने के लिए नियमित अंतराल में अपने हाथ अच्छी तरह साफ करें और सफ़ाई के प्राथमिक पाठ का पूरा ख्याल रखें। एक दिन के दौरान, नियमित अंतराल में जितनी बार हो सके, उतनी बार हाथ साबुनयुक्त पानी से अच्छी तरह से धोएं। अगर पानी से हाथ धोना संभव न हो तो हैंड सैनिटाइजर का उपयोग करते रहें, जिसमें करीब 70% ऐल्कॉहॉल का अंश सम्मिलित हो।

आँख, नाक एवं मुँह का स्पर्श काम करें

कोरोना वायरस के संक्रमण से बचने का बेहद आसान तरीका यही है कि आप हाथों से बार-बार अपने चेहरा, नाक, आँख एवं मुँह छूने से बचें। यह इसलिए है कि अगर आप किसी संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आएं अथवा उनके द्वारा छुए हुए जगह को छू लिया गया हो और उसके बाद आप अपने चेहरे को हाथ लगाएँगे तो जाने-अनजाने में आप खुद ही उस वायरस को शरीर में प्रवेश करने की अनुमति दे देंगे। इसलिए डॉक्टर यही सलाह देते हैं कि अपने चेहरे को सबसे ज्यादा सुरक्षित रखें। इसलिए अनिवार्यत: मुखावरण पहनना चाहिए।

लिफ़्ट के बटन एवं दरवाजों के हैंडल्स पकड़ने से बचें

कोरोना वायरस के संक्रमण से सुरक्षित रहने का और एक उपाय है - लिफ़्ट के बटन, सार्वजनिक स्थलों के दरवाज़े तथा शौचालय के दरवाजों के नॉब एवं हैंडल्स को नंगे हाथों से न छुएँ, जहाँ से वाइरस का संक्रमण आसानी से होता है। जब हर जगह कोरोना वायरस के फैलने की आशंका रहती है, तब आप इनको पकड़ते समय सावधानीपूर्वक टिश्यू पेपर का उपयोग करते हुए पकड़ सकते हैं या किसी अन्य चीजों के द्वारा उसके संपर्क में ये, जिससे आसानी से संक्रमित न हो। क्योंकि इस वायरस को किसी भी स्टील के हैंडल या लिफ्ट के बटन में सबसे ज्यादा समय तक जीवित रहने की क्षमता है। अतः कोशिश करें लिफ्ट के बटन को कोहनी से दबाएँ। फिर भी आपको इन चीज़ों को हाथों से छूना पडें तो शीघ्र ही हाथ को साबुन पानी या हैंड सैनिटाइजर से साफ कर लें।

सार्वजनिक परिवहन में यात्रा के दौरान अधिक सावधानी बरतें

सार्वजनिक परिवहन विशेषकर बस, ऑटो या मेट्रो में सफर करते समय अपना चेहरा द्विस्तरीय मुखावरण (मास्क) से ढककर रखें। हाथों में दस्ताने पहनें। अगर आपने मुखावरण या दस्ताने नहीं पहने हैं तो किसी भी ऐसे व्यक्ति के संपर्क में न आएं, जो सर्दी अथवा खांसी से परेशान हों तथा स्टील के हैंडल्स छूने से बचें।

हस्तदान से बचें

आजकल हर किसी से मिलते समय हाथ मिलाने या हस्तदान की आदत बन गई है। कोरोना वायरस एक दूसरे के हाथ मिलाने से फैलने की संभावना अधिक है। अगर आप बिना धोए या हाथों की सफ़ाई के बिना आप हस्तदान करेंगे तो दूसरे व्यक्ति के हाथों में मौजूद वायरस आपके शरीर में प्रवेश कर लेता है । अतः जब कोरोना वायरस अथवा कोविड़-19 का आतंक हर जगह फैला हुआ है, तो यह बेहतर होगा कि आप किसी से हाथ मिलाने के बजाय उन्हें दूर से ही हाथ जोड़कर नमस्ते करें, जो भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग भी है। ऐसा करने से आप वायरस से भी बचेंगे, दूसरों को भी बचाएंगे और अपनी संस्कृति का पालन भी करेंगे।

जनसमूह, सामाजिक सम्मिलन एवं शादी-समारोह में जाने से बचें

बाज़ार, मॉल जैसे सार्वजनिक स्थलों पर हर दिन सैकड़ों लोग आते-जाते हैं। यहाँ पर वायरस से संक्रमित लोगों की पहचान अत्यंत कठिन है, क्योंकि आजकल कई रोगियों में संक्रमण के लक्षण भी नहीं दिख रहे हैं। बेंगलूरु जैसे बड़े शहर में 70% से अधिक रोगी बिना लक्षण के पाए गए हैं। कोरोना वायरस के खतरे को देखते हुए लोग किसी भी तरह के बड़े सामूहिक सम्मेलन न करें। डॉक्टर भी सलाह दे रहे हैं कि कोरोनो वायरस से बचने के लिए जनसमूह, सामूहिक सम्मेलन, विवाह-समारोह, पारिवारिक मिलन आदि का आयोजन न करें तो एक हद तक कोरोना का संक्रमण नियंत्रित किया जा सकता है।

हवाई अड्डा, रेलवे स्टेशन एवं बस अड्डे जाते समय अधिक सावधानी बरतें

कोरोना के संक्रमण की तीव्रता को ध्यान में रखते हुए सरकार एवं सरकारी डॉक्टरों के द्वारा सलाह दी जा रही है कि हवाई अड्डे, रेलवे स्टेशन व बस अड्डे जैसे सार्वजनिक स्थानों पर जाने से अपने आप बचें तो सही एवं सुरक्षित कदम होगा, जहाँ अन्य देश व राज्यों से लोगों के आवागमन होता रहता है। अति आवश्यक अवसर पर ही ऐसे स्थानों पर जाएं। यदि वहाँ जाना अनिवार्य हो, तो मुखावरण व दस्ताने पहनें

तथा उसके साथ-साथ हैंड सैनिटाइजर भी रखें और यथावश्यक उसका उपयोग करें ताकि आप अपने आप को सुरक्षित रख सकें।

यह अनुमान लगाया गया है कि यह वायरस तो निकट भविष्य में हमें छोड़कर इस धरती से जाने में काफी समय लगेगा, हमें इसके साथ ही जीना पड़ेगा। जब तक इसे नष्ट करने हेतु कोई टीका या औषधि का आविर्भाव न हो तब तक इन सुरक्षा उपायों को अपनाते हुए जीवन बिताना पड़ेगा, नहीं तो हम इस वाइरस के चंगुल में आकर अपने जीवन से हाथ धो बैठेंगे।

स्वच्छता ही सुरक्षा है । मुखावरण पहनें व सामाजिक दूरी का पालन करें । करोना से न डरें, परंतु सावधान एवं जागरूक रहें।

अनुश्री पी.एस, हिंदी अनुवादक (क),
राजभाषा स्कंध, मुख्य कार्यालय

यक्षगान

कर्नाटक का अलौकिक नाट्य नृत्य

दक्षिण भारत अनोखे संगीत एवं कला का अपूर्व संगम स्थान है। यहाँ के संगीत, लोक नृत्य एवं साहित्य की विभिन्न विधाएँ विश्व प्रसिद्ध हैं । दक्षिण भारत के कर्नाटक राज्य का प्रमुख लोक नृत्य है - "यक्षगान"। यह कर्नाटक का परंपरिक नृत्य-नाट्य रूप है, जो शास्त्रीय व धार्मिक पृष्ठभूमि के साथ प्रस्तुत किया जाता है । लगभग पाँच शताब्दियों की सशक्त पारंपरिक आधार के साथ यक्षगान ने केवल कर्नाटक में; बल्कि वैश्विक लोक कला के रूप में अपना स्थान बना लिया है । यह केरल राज्य के नाट्य-नृत्य रूप कथकली के समरूपी है । इस नृत्य नाटिका का मूल तत्व अधिकतर धार्मिक कथा संदर्भों के साथ संबद्ध है, जो पारंपरिक लोक कला रूपों के लिए सर्वाधिक सामान्य विषय वस्तु के रूप में प्रयुक्त होते हैं। राज्य के जन समूह के लिए एक नाट्य मंच होने के कारण, यक्षगान संस्कृत नाटकों के कलात्मक तत्वों के समरूपी परिवेश में मंदिरों, गाँवों के चौराहों तथा धान के खेतों में पारंपरिक संगीत के साथ रामायण एवं महाभारत जैसे प्रसिद्ध पौराणिक ग्रंथों से ग्रहण की गई विषय-वस्तुओं के आधार पर सामान्यत: रात के दौरान प्रदर्शित किया जाता है । राज्य के मंदिरों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में धार्मिक भावना एवं संस्कृति के सशक्त प्रभाव होने के कारण से यक्षगान अत्यंत लोकप्रिय बन गया तथा इससे संबद्ध कलाकारों को अत्यधिक सम्मान भी प्राप्त हु आ ।

यक्षगान एक अनूठी शैली के साथ नृत्य, संगीत, संवाद, वेशभूषा, साज-श्रृंगार एवं मंच तकनीकों के साथ प्रस्तुत किया जाता है । इसकी प्रस्तुति के दौरान, संगीतकारों के एक समूह द्वारा पृष्ठभूमि में कथा गाई जाती है; अभिनेता द्वारा भाव द्वारा अभिनय, नृत्य एवं संवाद का कार्य किया जाता है । इसके मुख्य गायक को 'भागवत' (शास्त्रीय गायक) कहा जाता है, जिनके वाचन व गायन के समर्थन के लिए राग व ताल के अनुसार मद्दला (ढोलक समान), पुँगी (पाइप), मंजीरा व चेंडे जैसे पारंपरिक संगीत वाद्ययंत्र बजाए जाते हैं ।

विभिन्न प्रकार के आकर्षक रंगों से युक्त साज-शृंगार, वेश-भूषा एवं आभूषणों के कारण भी यक्षगान अत्याकर्षक बन जाता है, जो कथा-वस्तु के पात्रों पर आधारित होते हैं । परंपरागत रूप से यक्षगान के गहने लकड़ी, छोटे-छोटे आईने एवं रंगीन पत्थरों से बनाए जाते हैं; जिसके लिए आजकल थर्मोकोल जैसी हल्की समग्रियों का भी उपयोग किया जाता है । फिर भी, मुख्यतया लकड़ी के गहने ही प्रयुक्त होते हैं । यक्षगान की वेशभूषा में, रंगीन कपड़ों से बनी टोपी, कवच, छाती, भुजा एवं कंधे के आवरण तथा कमरबंध सम्मिलित हैं, जो रंगी हु ई लकड़ी व सोने की पन्नी के साथ सँवारे जाते हैं। एक रंगीन बनियान के ऊपर गहने पहने जाते हैं और शरीर के निचले भाग लाल, पीले व नारंगी जैसे विभिन्न रंगों के अनूठे संयोजन से बने अंगवस्त्रों से ढके रहता है। पौराणिक पात्र, बन्नडा वेषा, राक्षस आदि के लिए मुख पर रंग

चढ़ाने के लिए तीन से चार घंटे लग जाते हैं। पारंपरिक यक्षगान में, नर ही महिला पात्रों की भूमिका निभाते थे । हाल ही में, यक्षगान के क्षेत्र में, महिला कलाकार भी पुरुष एवं महिला पात्रों की भूमिका निभाने लगी हैं । स्त्री पात्रों की वेश-भूषा के लिए साड़ी एवं गहने का उपयोग किया जाता है।

भगवान गणेश की वंदना से यक्षगान प्रारंभ होता है, जिसके बाद एक विदूषक आ जाता है तथा इसके नेपथ्य में तीन कलाकारों के द्वारा चेंड़े, मद्दला व मंजीरा जैसे वाद्ययंत्र बजाए जाते हैं । भागवत नामक कथावाचक भी इस दल का अंश है, जिसके द्वारा संपूर्ण प्रस्तुति के नियंत्रक का कार्य किया जाता है । भागवत के द्वारा गीतों के माध्यम से कथा का वाचन, पात्रों का परिचय तथा कभी-कभी पात्रों के वार्तालाप का कार्य किया जाता है । भागवत को संगीत एवं पौराणिक व धार्मिक कथा का ज्ञान प्राप्त होना चाहिए। क्योंकि पौराणिक कथाओं एवं पात्रों के ज्ञान रखने वाले विशाल जनसमूह द्वारा यक्षगान देखा जाता है। यक्षगान की एक और अनोखी विशेषता यह है कि इसके अभिनेता व अन्य कलाकारों के द्वारा मंचन से पूर्व किसी भी प्रकार का अभ्यास नहीं किया जाता अथवा लिखित रूप में आपसी संवाद का उपयोग नहीं किया जाता।

वर्तमान परिदृश्य में, यक्षगान न केवल भारत में, बल्कि संपूर्ण विश्व में सर्वाधिक लोकप्रिय नाट्य-नृत्य कला के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है । यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि केवल कर्नाटक राज्य में ही प्रति वर्ष 10,000 से अधिक मंचों पर यक्षगान प्रदर्शित किए जाते हैं। यही इस महान नाट्यरूप के महत्व का सर्वोत्तम प्रमाण है ।

एम.पी.दामोदरन
प्रभारी सहायक निदेशक
हिंदी शिक्षण योजना, बेंगलूरु
(पूर्व उपनिदेशक (रा.भा), कॉफ़ी बोर्ड)

चित्र चारुता

" हर बच्चा कलाकार होता है।
सवाल यह है कि बड़े होने पर भी वह कैसे कलाकार बने रहें। "

पाब्लो पिकासो

सुश्री मालविका एम. दास
श्री मोहन दास, वरिष्ठ सहायक, एम.पी.एस अनुभाग की पुत्री

चित्रकार के हाथों का कमाल – खुदा भी है हैरान !

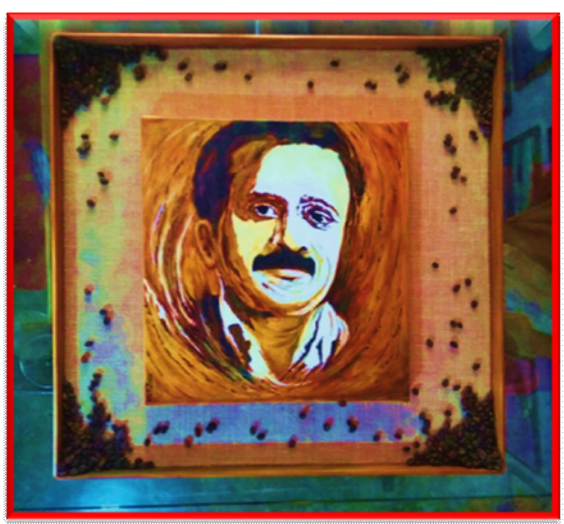

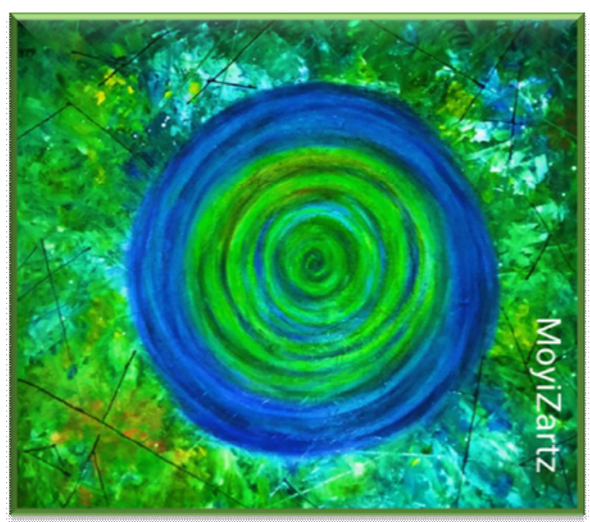

सेतु रॉय आर.एस, वरिष्ठ परिचर-भंडारक, सी.सी.आर.आई

चित्रकार की करिश्मा – खुदा भी है हैरान !

कु. देविका कृष्णा, श्रीमती शिबिला, कनिष्ठ सहायक, निर्यात अनुभाग की सुपुत्री

कु. देविका कृष्णा, श्रीमती शिबिला, कनिष्ठ सहायक, निर्यात अनुभाग की सुपुत्री

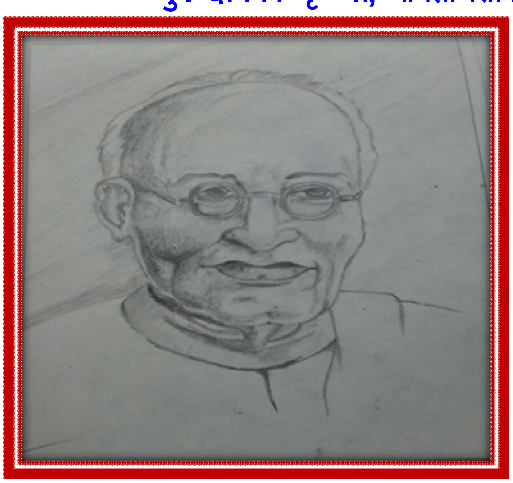

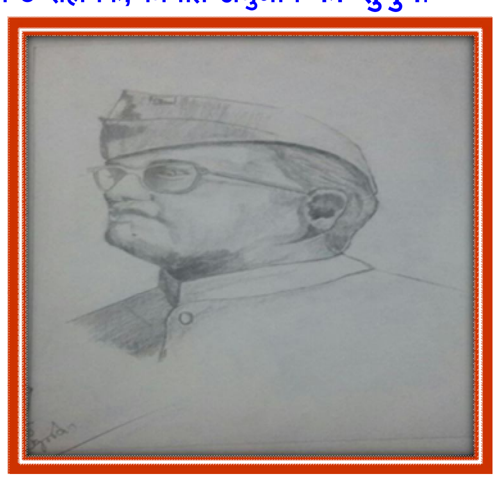

कु. भरत कृष्णा, श्रीमती शिबिला, कनिष्ठ सहायक, निर्यात अनुभाग का सुपुत्र

चित्रकार की करिश्मा – खुदा भी है हैरान !

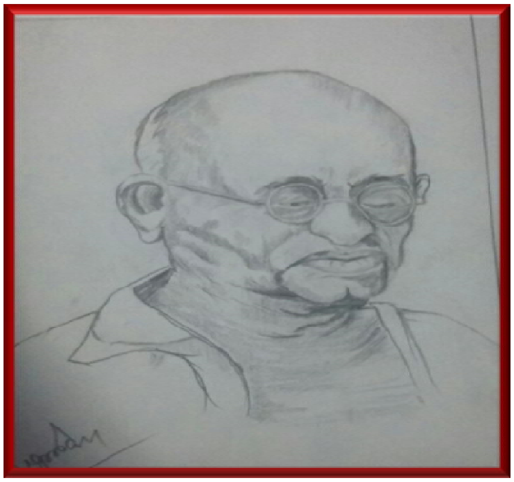

कु. भरत कृष्णा, श्रीमती शिबिला, कनिष्ठ सहायक, निर्यात अनुभाग का सुपुत्र

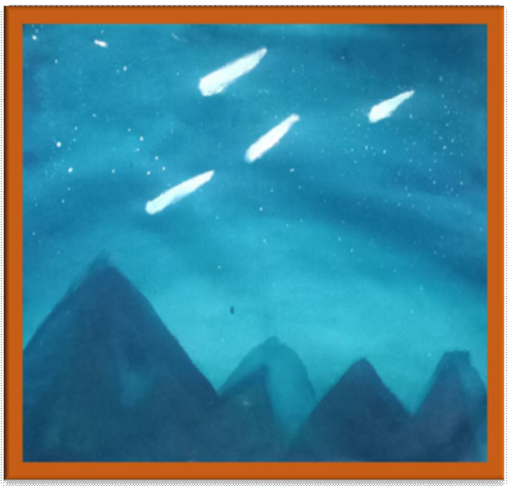

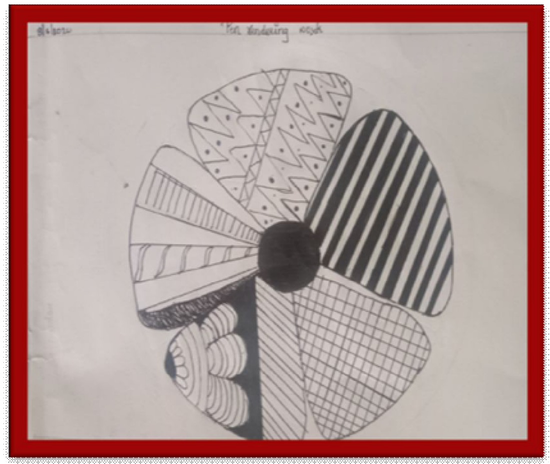

कु. स्मृति एस नायर, श्रीमती अनुश्री. पी. एस, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक की सुपुत्री

कु. स्मृति एस नायर, श्रीमती अनुश्री. पी. एस, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक की सुपुत्री

चित्रकार की करिश्मा – खुदा भी है हैरान !

कु. शरण्या एन ईश्वर, श्री टी.वी. नीलकंठन, जन संपर्क अधिकारी की सुपुत्री

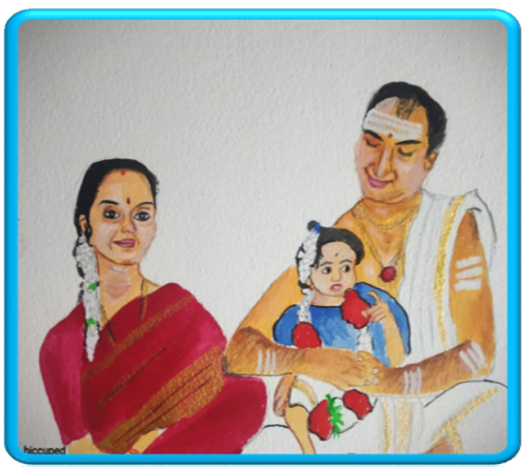

कु. शरण्या एन ईश्वर, श्री टी.वी. नीलकंठन, जन संपर्क अधिकारी की सुपुत्री

कु. शरण्या एन ईश्वर, श्री नीलकंठन, जन संपर्क अधिकारी की सुपुत्री

भाषा विविधा

" देशी भाषा का अनादर राष्ट्रीय आत्महत्या है। "

महात्मा गांधी

वचनामृतम

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटम्बकम् ॥

"यह मेरा है", "वह उसका है" जैसे विचार केवल संकुचित व्यक्ति ही सोचता है। जो उदार मनस्क है, वे तो सारे संसार को अपने परिवार के समान सोचता है।

क्षणशः कणशश्चैव विद्यां अर्थं च साधयेत् ।
क्षणे नष्टे कुतो विद्या कणे नष्टे कुतो धनम् ॥

प्रत्येक क्षण एवं कण का उपयोग सीखने तथा धन कमाने के लिए करना चाहिए, जो एक क्षण नष्ट करता है, वह विद्या और जो धन कमाने का समय नष्ट करता है, वह धन प्राप्त नहीं नहीं कर सकता।

अश्वस्य भूषणं वेगो मत्तं स्याद गजभूषणम् ।
चातुर्यं भूषणं नार्या उद्योगो नरभूषणम् ॥

तेज चाल घोड़े का आभूषण है, मंद चाल हाथी का आभूषण है, कुशलता नारी का आभूषण है और उद्योग में लगे रहना नर का आभूषण है।

कुलस्यार्थे त्यजेदेकम् ग्राम्स्यार्थे कुलंज्येत् ।
ग्रामं जनपदस्यार्थे आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत् ॥

परिवार के लिए अपना स्वार्थ त्यागना चाहिए, गाँव के लिए परिवार त्यागना चाहिए, देश के लिए गाँव त्यागना चाहिए और आत्मा के लिए समस्त वस्तुओं को त्यागना चाहिए।

नाक्षरं मंत्रहीनं नमूलं नौधिम् ।
अयोग्य पुरुषं नास्ति योजकस्तत्रदुर्लभः ॥

ऐसा कोई भी अक्षर नहीं है जिसका प्रयोग मंत्र के लिए न किया जा सके, ऐसी कोई भी वनस्पति नहीं है जिसका प्रयोग औषधि के लिए न किया जा सके और ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जिसे सदुपयोग के लिए प्रयुक्त किया जा सके, परंतु ऐसे व्यक्ति अत्यन्त दुर्लभ हैं जो इन सभी का सदुपयोग करना जानते हों।

सत्यस्य वचनं श्रेयः सत्यादपि हितं वदेत् ।
यद्भूतहितमत्यन्तं एतत् सत्यं मतं मम ॥

यद्यपि सत्य वचन बोलना श्रेयस्कर है, तथापि वह सत्य ही बोलना चाहिए, जिससे सभी का का कल्याण हो। मेरे (नारद के) विचार में जो बात सभी के लिए कल्याणकारी है वही सत्य है।

ಹೆಲೆನ್ ಕೆಲ್ಲರ್

ಇತ್ತೀಚೆಗೆ ಹಿಂದಿ ಚಾನೆಲ್ ಒಂದರಲ್ಲಿ **"ಬ್ಲಾಕ್"** ಎಂಬ ಹಿಂದಿ ಚಲನಚಿತ್ರ ನೋಡಿದೆ. ಚಲನಚಿತ್ರದ ಕಥೆಯಂದರೆ ದೇವರಾಜ್ ಸಹಾಯ್ ಎಂಬ ಶಿಕ್ಷಕರೊಬ್ಬರು ಮಿಚೆಲ್ ಎಂಬ ಅಂಧ ಹಾಗೂ ಮೂಕ ಮಗುವನ್ನು ಸಾಕಿ ತನ್ನ ಜೀವನವನ್ನು ಮುಡಿಪಾಗಿಟ್ಟು, ಅವಳಿಗೆ ಶಿಕ್ಷಣವನ್ನು ನೀಡಿ ಅವಳನ್ನು ಪದವೀಧರಳನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುತ್ತಾರೆ. ನಂತರ ಏನೋ ಒಂದು ಕಾರಣದಿಂದಾಗಿ ದೂರವಾಗುತ್ತಾರೆ. ಕೆಲವು ವರ್ಷಗಳ ನಂತರ ಮಾಯವಾದ ದೇವರಾಜ್ ಸಹಾಯ್ ವಯಸ್ಸಾಗಿ ತನ್ನ ಇಳಿವಯಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಮನೋ ಕ್ಷೋಭೆಗೊಳಗಾಗಿ ಮಿಚೆಲ್ ಮನೆಯ ಹತ್ತಿರ ಬಂದಿರುತ್ತಾರೆ. ಆಗ ಮಿಚೆಲ್ ಚಿಕ್ಕಂದಿನಲ್ಲಿ ತನ್ನ ಆರೈಕೆ ಮಾಡಿದುದನ್ನು ನೆನಸಿಕೊಂಡು ತಾನು ತನ್ನ ಗುರುವಿನ ಸೇವೆಗಾಗಿ ನಿಲ್ಲುತ್ತಾಳೆ. ನಿಜವಾಗಲೂ ಗುರುವಾಗಿ ಶ್ರೀ ಅಮಿತಾಭ್ ಬಚ್ಚನ್, ಶಿಷ್ಯೆಯಾಗಿ ಶ್ರೀಮತಿ ರಾಣಿ ಮುಖರ್ಜಿ ಯವರ ಅಭಿನಯ ಅಧ್ಭುತವಾಗಿತ್ತು. ಇದನ್ನು ಹಿಂದಿ ಚಿತ್ರರಂಗದ ಪ್ರಖ್ಯಾತ ನಿರ್ದೇಶಕ ಶ್ರೀ ಸಂಜಯ್ ಲೀಲಾ ಬನ್ಸಾಲಿ ನಿರ್ದೇಶನ ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ. ತುಂಬ ಅದ್ಭುತವಾದ ಹಾಗೂ ಮನ ಮಿಡಿಯುವ ಚಿತ್ರ. ಈ ಚಿತ್ರದ ಹಿನ್ನೆಲೆ ನೋಡಿದಾಗ ಇದು ಹೆಲೆನ್ ಕೆಲ್ಲರ್ ರವರ ಜೀವನಾಧಾರಿತ ಚಿತ್ರ ಎಂದು ತಿಳಿಯಿತು. ನನ್ನ ಕುತೂಹಲಕ್ಕೆ ಹೆಲೆನ್ ಕೆಲ್ಲರ್ ಬಗ್ಗೆ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಲು ಹೋದಾಗ ಇಂಗ್ಲೀಷ್ ಭಾಷೆಯಲ್ಲಿ **"ವಿಸ್ಡಮ್"** ಮ್ಯಾಗಝಿನ್ ನಲ್ಲಿ ಸಿಕ್ಕ ಮಾಹಿತಿಯನ್ನು ನಿಮ್ಮ ಮುಂದೆ ಹಂಚಿಕೊಳ್ಳುವ ಪ್ರಯತ್ನ.

ಹೆಲೆನ್ ಕೆಲ್ಲರ್ ಹುಟ್ಟಿದ್ದು ಜೂನ್ 27, 1880, ಅಮೆರಿಕಾದ ಅಲಬಾಮಾದ ಸುಕುಂಬೆ ಎಂಬಲ್ಲಿ. ಎರಡು ವರ್ಷದವಳಿದ್ದಾಗಲೆ ಖಾಯಿಲೆಯಿಂದಾಗಿ ನೋಡುವ ಹಾಗೂ ಕೇಳುವ ಶಕ್ತಿ ಕಳೆದುಕೊ0ಡಳು. ಅವಳ ಪೋಷಕರು ಸಹಾ ಮಧ್ಯಾಹ್ನದ ಊಟದ ಬೆಲ್ ಹೊಡೆದಾಗ ಅಥವಾ ಯಾರಾದರೂ ಶೆಕ್ ಹ್ಯಾಂಡ್ ಮಾಡಲು ಕೈ ಕೊಡಲು ಮುಂದೆ ಚಾಚಿದಾಗ ಅವಳು ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಿಸದಿರುವುದನ್ನು ಗಮನಿಸಿದರು. ಹೆಲನ್ ಕೆಲ್ಲರ್ ತನ್ನ ಮನೆಯ ಅಡುಗೆಯವನ ಮಗಳ ಹತ್ತಿರ ಸನ್ನೆಯ ಮೂಲಕ ಭಾವನೆಗಳನ್ನು ಹಂಚಿಕೊಳ್ಳಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದಳು. ಹೆಲನ್ 7 ವರ್ಷದವಳಾಗುವುದರೊಳಗೆ 60 ಸನ್ನೆಯ ಮೂಲಕ ಮಾತನಾಡುವುದನ್ನು ಕಲಿತು ಕೊಂಡಿದ್ದಳು. ತನ್ನ ಈ ಅಂಗವಿಕಲತೆಯಿಂದ ಹಲವಾರು ಸಮಸ್ಯೆಗಳನ್ನು ಎದುರಿಸಬೇಕಾಯಿತು.

ಹೆಲೆನ್ ತಾಯಿ ಅವಳ ಈ ಸಮಸ್ಯೆಗೆ ಉತ್ತರ ಹುಡುಕುತ್ತಿದ್ದಾಗ, ಚಾರ್ಲ್ಸ್ ಡಿಕೆನ್ಸ್ ಬರದಿರುವ "ಅಮೆರಿಕನ್ ನೋಟ್ಸ್" ಎಂಬ ಪ್ರವಾಸ ಕಥನದ ಪುಸ್ತಕದಲ್ಲಿ ಲಾರಾ ಬ್ರಿಡಗಾಮ್ ಎಂಬ ಮೂಕ ಹಾಗೂ ಕಿವುಡು ಹುಡುಗಿಯ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸದ ಯಶಸ್ಸಿನ ಗಾಥೆಯನ್ನು ಓದಿದರು. ಹೆಲೆನ್ ಹಾಗು ಅವಳ ತಂದೆ ಈ ವಿಚಾರದಲ್ಲಿ ವಿಶೇಷ ತಜ್ಞರಾದ ಡಾ. ಜೆ. ಜೂಲಿಯನ್ ಜೈಲಮ್ ಅವರನ್ನು ಬೇಟಿಯಾಗಲು ಬಾಲ್ಟಿಮೊರ್, ಮೆರಿಲ್ಯಾಂಡ್ ಗೆ ಹೋದರು. ಅವರು ಅವಳನ್ನು ಪರೀಕ್ಷಿಸಿದ ನಂತರ ಟೆಲಿಫೋನ್ ಅವಿಷ್ಕಾರಕನಾದ ಅಲೆಕ್ಸಾಂಡರ್ ಗ್ರಹಾಂಬೆಲ್ ಅವರನ್ನು ಬೇಟಿಯಾಗಲು ಹೇಳಿದರು. ಆಗ ಅವರು ಕಿವುಡು ಹಾಗೂ ಅಂಧ ಮಕ್ಕಳ ಬಗ್ಗೆ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದರು. ಅಲೆಕ್ಸಾಂಡರ್ ಗ್ರಹಾಂಬೆಲ್ ಅವರು ಹೆಲೆನ್, ಅವಳ ಪೋಷಕರಿಗೆ ಮೆಸ್ಸಾಚುಸ್ಸೆಟ್ಸ್ ನ ಬೋಸ್ಟೋನ್ ನಲ್ಲಿರುವ ಅಂಧ ಮಕ್ಕಳಿಗಾಗಿಯೇ ಇರುವ **ಪರ್ಕಿನ್ಸ್ ಇನ್ಸ್ಟಿಟ್ಯುಟ್** ಗೆ ಬೇಟಿ ನೀಡಲು ಶಿಫಾರಸ್ಸು ಮಾಡಿದರು. ಅಲ್ಲಿಯ ನಿರ್ದೇಶಕರಾದ ಮೈಕಲ್ ಅನಗ್ನೊಸ್,ಅವರು ಹೆಲೆನ್ ಅವರನ್ನು ಆನ್ ಸುಲ್ಲಿವಾನ್ ಬಳಿ ಶಿಷ್ಯತ್ವ ಪಡೆಯಲು ಹೇಳಿದರು ಏಕೆಂದರೆ ಅವರು ಇತ್ತೀಚೆಗಷ್ಟೆ ಸಂಸ್ಥೆಯಿಂದ ಪದವಿ ಮುಗಿಸಿಕೊಂಡು ಹೋಗಿದ್ದರು.

ಮಾರ್ಚ್ 1887 ರಿಂದ ಸುಲ್ಲಿವಾನ್ ಅವರು ಹೆಲೆನ್ ಮನೆಗೆ ಬಂದು ಅವಳಿಗೆ ಬೋಧಿಸತೊಡಗಿದರು. ಆಕೆ ಹೆಲೆನ್ ಕೈ ಮೇಲೆ ಅಕ್ಷರ ಬರೆದು ಅರ್ಥ ಮಾಡಿಸಲು ಪ್ರಯತ್ನ ಮಾಡತೊಡಗಿದರು. ಆದರೆ ಈ ವಿಧಾನದಲ್ಲಿ ಹೆಲೆನ್ ಗೆ ತನ್ನ ಅಧ್ಯಾಪಕಿಯೊಡನೆ ಸಹಕರಿಸಲು ಹಾಗೂ ಕಲಿಯಲು ಬಹಳ ಕಷ್ಟವಾಯಿತು. ಹೆಲೆನ್ ತನ್ನ, ತಂದೆ, ತಾಯಿ ಹಾಗೂ ಕುಟುಂಬಸ್ಥರಿಂದ ದೂರವಿರುವ ಸಲಹೆ ನೀಡಿದರು. ಏಕೆಂದರೆ, ಆಗ ಆಕೆ ತನ್ನ ಅಧ್ಯಾಪಕಿಯ ಆದೇಶಗಳನ್ನು ಚಾಚೂ ತಪ್ಪದೆ ಪಾಲಿಸಬಹುದು ಹಾಗೂ ಸರಿಯಾಗಿ ಕಲಿಯುವ ವಾತಾವರಣ ನಿರ್ಮಾಣವಾಗಬಹುದು ಎಂಬ ನಂಬಿಕೆಯಿಂದ. ಹಾಗಾಗಿ ಎಸ್ಟೇಟ್ ಮನೆಯಿಂದ ಸ್ವಲ್ಪ ದೂರದ ಕಾಟೇಜ್ ಗೆ ಬಂದು ಅಲ್ಲಿ ಕಲಿಸುವ ಪ್ರಯತ್ನ ಮಾಡತೊಡಗಿದರು. ಸುಲ್ಲೀವಾನ್ ಮೊದಲ ಬಾರಿಗೆ ಆಕೆಗೆ "ವಾಟರ್" ಎಂಬ ಶಬ್ದವನ್ನು ಹೇಳಿಕೊಟ್ಟರು.

ಹೆಲನ್ ಕೈಯ ಮೇಲೆ ಬರೆದು ಅದರ ಉಚ್ಚಾರಣೆ ಮಾಡಿ ಅದೇ ಸಮಯಕ್ಕೆ ನಲ್ಲಿಯಿಂದ ನೀರನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಅವಳ ಕೈ ಮೇಲೆ ಸುರಿಸುವ ಹಾಗೂ ಅದನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವ ಭಾವನೆ ಉಂಟುಮಾಡಿದಳು. ಆಗ ಹೆಲೆನ್ ಶಬ್ದದ ಉಚ್ಚಾರಣೆ ಹಾಗೂ ಅದರ ಅರ್ಥವನ್ನು ತಿಳಿದುಕೊಂಡಳು. ಆ ರಾತ್ರಿಯೇ 30 ಶಬ್ದವನ್ನು ಕಲಿತುಕೊಂಡಳು. 1890 ನಂತರ ಹೆಲೆನ್ ತನ್ನ ಸಂವಹನ ಕೌಶಲ್ಯವನ್ನು ವೃದ್ಧಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ವಿವಿಧ ಸಂಸ್ಥೆಯನ್ನು ಭೇಟಿ ಮಾಡಿವುದರ ಜೊತೆಗೆ ತನ್ನ ವಿಧ್ಯಾಭ್ಯಾಸವನ್ನು ನಿಯಮಿತವಾಗಿ ಮುಂದುವರೆಸತೊಡಗಿದಳು. ಮುಂದೆ ಕಲಿಯುವ ಆಸೆ ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಕಾಲೇಜಿಗೆ ಹೋಗುವ ಧೃಡ ನಿರ್ಧಾರ ಮಾಡಿದಳು.

ಅವಳ ಈ ಯಶಸ್ಸಿನ ಕಥೆ ನಿಧಾನಕ್ಕೆ ಎಲ್ಲರಿಗೂ ತಿಳಿದು, ಜನಗಳೇ ಅದರಲ್ಲೂ ಮಾರ್ಕ್ ಟ್ವೇನ್ ನಂತಹ ಪ್ರಖ್ಯಾತ ವ್ಯಕ್ತಿಗಳು ಆಕೆಯನ್ನು ಭೇಟಿಯಾದರು. ಹೆಲೆನ್ ಕೆಲ್ಲರ್ ಗೆ ಮಾರ್ಕ್ ಟ್ವೇನ್ ನಿಂದ **ಸ್ಟ್ಯಾಂಡರ್ಡ್ ಆಯಲ್ ಕಂಪನಿಯಲ್ಲಿ** ಹೆನ್ರೀ ಎಚ್. ರೋಜರ್ಸ್ ಎಂಬ ವ್ಯಕ್ತಿಯ ಪರಿಚಯವಾಯಿತು. ಮಾರ್ಕ್ ಟ್ವೇನ್ ನಂತಯೇ ಅವರ ಸ್ನೇಹಿತರಾದ ಹೆನ್ರೀ ಎಚ್.ರೋಜರ್ಸ್ ಸಹಾ ಅವಳ ಮುಂದಿನ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸಕ್ಕೆ ರಾಡ್ ಕ್ಲಿಫ್ ಕಾಲೇಜ್ ನಲ್ಲಿ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಮುಂದುವರೆಸಲು ಎಲ್ಲ ತರಹದ ನೆರವು ನೀಡಲು ಮುಂದಾದರು.

ಕಾಲೇಜಿನಲ್ಲಿ ಆಕೆ ತನ್ನ ಗುರುಗಳಾದ ಆನೆ ಸುಲ್ಲೀವಾನ್ ಜೊತೆಗೆ ಇರುತ್ತಿದ್ದಳು. ಆಕೆ ಪ್ರತೀ ಪಾಠವನ್ನು ಆಸಕ್ತಿಯಿಂದ ಲೆಕ್ಚರನ್ನು ಹೇಳಿಕೊಡುತ್ತಿದ್ದರು. ಆನ್ ಸುಲ್ಲೀವಾನ್ ಹೆಲೆನ್ ಇದ್ದ ರೂಮಿನ ಪಕ್ಕದಲ್ಲೇ ಇದ್ದು ಆಕೆಯ ಪಾಠ ಪ್ರವಚನದಲ್ಲಿ ಸಹಾಯ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಳು. 1887 ರಿಂದ್ 1936 ರ ತನಕ ಆನ್ ಸುಲ್ಲೀವಾನ್ ಮರಣ ಹೊಂದುವ ತನಕ ಅಂದರೆ ಸುಮಾರು 49 ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ಹೆಲೆನ್ ಜೊತೆಗಿದ್ದರು.

ಹೆಲೆನ್ ತನ್ನ 24ನೇ ವಯಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಅಂದರೆ 1904 ರಲ್ಲಿ ಕಾಲೇಜಿನಿಂದ ಪದವಿಯನ್ನು ಪಡೆದರು. ಅಷ್ಟೊತ್ತಿಗಾಗಲೇ ಹೆಲೆನ್ ಎದುರಿನವರು ತುಟಿಯ ಚಲನೆಯನ್ನು ಗಮನಿಸಿ ಅವರು ಏನು ಹೇಳುತ್ತಿದ್ದಾರೆ ಎಂಬುದನ್ನು ಗ್ರಹಿಸುವುದು ಹಾಗೂ ಹೇಳುವುದು, ಟೈಪ್ ಮಾಡುವುದು ಹಾಗೂ ಬೆರಳುಗಳಿಂದ ಅಕ್ಷರ ಬರೆಯುವುದು ಮುಂತಾದ ಸಂವಹನ ಮಾಧ್ಯಮಗಳ ಕಲೆಯನ್ನು ಕಲಿತ್ತಿದ್ದಳು. 1903ರಲ್ಲಿ ತನ್ನ ಮೊದಲ ಪುಸ್ತಕವಾದ **"ದಿ ಸ್ಟೋರಿ ಆಫ್ ಮೈ ಲೈಫ್"** ಬರೆದು ಪ್ರಕಾಶಗೊಳಿಸಿದಳು. ಅದರಲ್ಲಿ ತನ್ನ ಕಷ್ಟದ ಬಾಲ್ಯದ ದಿನಗಳಿಂದ ಹಿಡಿದು ಒಬ್ಬ ಪದವೀಧರಳಾಗಿ ತನ್ನ ಇಲ್ಲಿಯ ದಿನದ ತನಕ ತನ್ನದ ಜೀವನದ ಅನುಭವದ ಪ್ರಯಾಣವನ್ನು ಉಲ್ಲೇಖಿಸಿದ್ದಳು.

ಹೇಗೆ ತನ್ನಂತಹ ಮಕ್ಕಳ ಬಾಳಿನಲ್ಲಿ ಬೆಳಕು ತರಬಹುದು ಎಂದು ಯೋಚಿಸಿ ಕಾಲೇಜಿನ ನಂತರ ಕಲಿಯುವ ಹಾಗೂ ಅನುಭವಕ್ಕೋಸ್ಕರ ಜಗತ್ತಿನಾದ್ಯಾಂತ ಸಂಚರಿಸಿದರು. ಹೆಲೆನ್ ಕೆಲ್ಲರ್ ಸ್ವಲ್ಪ ಸಮಯದಲ್ಲಿಯೇ ವಿಖ್ಯಾತ ವ್ಯಕ್ತಿಯಾದರು, ಹಾಗೆಯೆ ತನ್ನ ಅನುಭವನ್ನು ತನ್ನ ಭಾಷಣಗಳ ಮೂಲಕ ಶ್ರೋತೃಗಳೊಂದಿಗೆ ಹಂಚಿಕೊಳ್ಳುವುದರ ಮುಖಾಂತರ ಹಾಗು ತನ್ನಂತೆ ಅಂಗವೈಕಲ್ಯ ಹೊಂದಿರುವ ಮಕ್ಕಳ ಬಾಳಿನಲ್ಲಿ ಬೆಳಕು ತರಲು ಶ್ರಮಿಸತೊಡಗಿದಳು. 1915ರಲ್ಲಿ ವಿಖ್ಯಾತ ಯೋಜನಾ ತಜ್ಞರಾದ ಜಾರ್ಜ್ ಕೆಸ್ಲರ್ ರೊಂದಿಗೆ ಸೇರಿ ಅಂಧತ್ವದ ಕಾರಣ ಹಾಗೂ ಪರಿಣಾಮ ಹಾಗೂ ಕುಪೋಷಣೆಯ ಬಗ್ಗೆ ಅಧ್ಯಯಯನ ಮಾಡಲು ಹೆಲೆನ್ ಕೆಲ್ಲರ್ ಇಂಟರ್ ನ್ಯಾಷನಲ್ ಸಂಸ್ಥೆಯನ್ನು ಹುಟ್ಟು ಹಾಕಿದರು.

ಅನೇಕ ಸಾಮಾಜಿಕ ಕಾರಣಗಳಿಗಾಗಿ ಹೋರಾಟ ಮಾಡಿ ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ಅದರ ಬಗ್ಗೆ ಜಾಗೃತಿ ಮೂಡಿಸಿದರು. ಹಾಗೆಯೇ ಅಮೆರಿಕನ್ ಸಿವಿಲ್ ಲಿಬರ್ಟೀಸ್ ಯೂನಿಯನ್ ಎಂಬ ಸಂಸ್ಥೆಯನ್ನು ಹುಟ್ಟು ಹಾಕಿದರು. ತನ್ನ ಧ್ಯೇಯೊದ್ದೇಶಗಳ ಬಗ್ಗೆ ಜನಗಳಲ್ಲಿ ಅರಿವು ಮೂಡಿಸಲು ವಿಶ್ವದಾದ್ಯಂತ ಸಂಚರಿಸಿದಳು. ತನ್ನ ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಹಲವು ಪ್ರಶಸ್ತಿ ಹಾಗೂ ವಿಖ್ಯಾತಿಯನ್ನು ಪಡೆದರು. ಅಂಧತ್ವದ ಬಗ್ಗೆ ಅವರು ನೀಡಿದ ಅರಿವು ಹಾಗೂ ಸರ್ವತೋಮುಖ ಕೊಡುಗೆಗಾಗಿ ಹೆಲನ್ ಇಂದಿಗೂ ಗುರುತಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಾರೆ. ಹೆಲೆನ ಕೆಲ್ಲರ್ 1 ಜೂನ್ 1968ರಲ್ಲಿ ಅಂದರೆ ತನ್ನ 87ನೇ ವಯಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಮರಣ ಹೊಂದಿದರು.

ಸಿ. ಮಾದಪ್ಪ, ಕ. ಹಿ. ಅ,
ಮುಖ್ಯ ಕಚೇರಿ, ಬೆಂಗಳೂರು

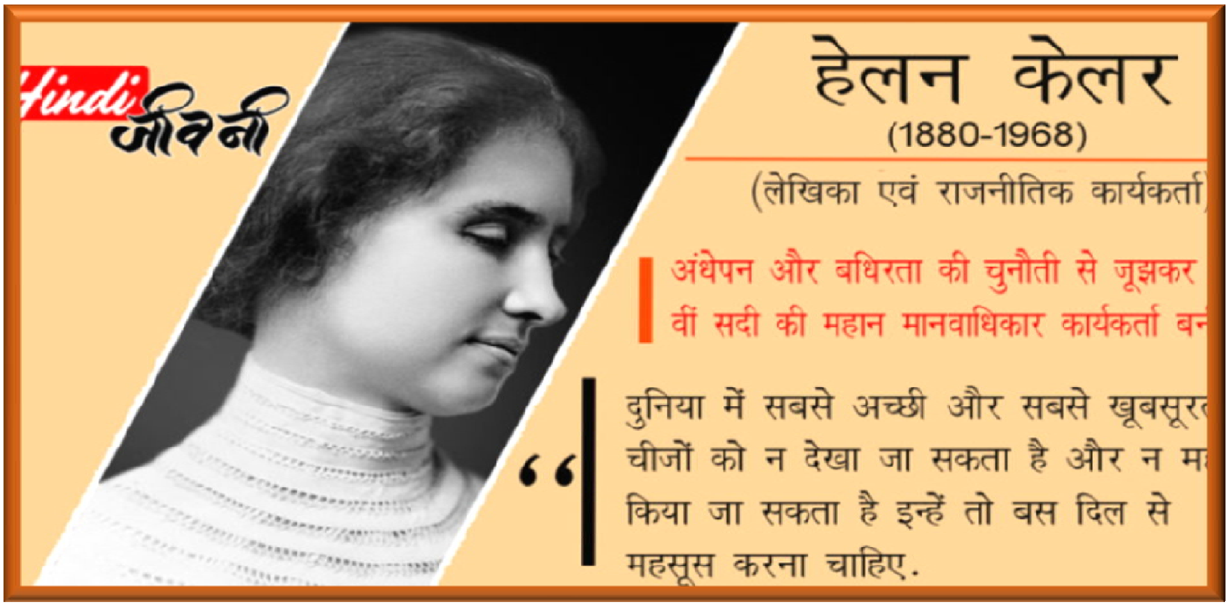

திருக்குறள்-3. நீத்தார் பெருமை

तिरुक्कुरल – 3. संत की महिमा

<table>
<tr><td>குறள் எண் : 21</td><td>ஒழுக்கத்து நீத்தார் பெருமை விழுப்பத்து
வேண்டும் பனுவல் துணிவு</td></tr>
<tr><td colspan="2">सब धर्म-ग्रंथ यह कहते हैं कि निरंतर सद्गुण के साथ सन्यास के पथ पर चलने वालों की महिमा सर्वश्रेष्ठ है।</td></tr>
<tr><td>குறள் எண் : 22</td><td>துறந்தார் பெருமை துணைக்கூறின் வையத்து
இறந்தாரை எண்ணிக்கொண் டற்று</td></tr>
<tr><td colspan="2">संत की महिमा गणना करना मृत लोगों की संख्या की गणना के समान है ।</td></tr>
<tr><td>குறள் எண் : 23</td><td>இருமை வகைதெரிந் தீண்டறம் பூண்டார்
பெருமை பிறங்கிற் றுலகு</td></tr>
<tr><td colspan="2">जन्म व मुक्ति के सुख एवं दुःख को समझकर जन्म से मुक्ति ग्रहण करने हेतु सन्यास ग्रहण करने वालों का मान इस संसार में बढ़ेगा।</td></tr>
<tr><td>குறள் எண் :24</td><td>உரனென்னுந் தோட்டியான் ஓரைந்தும் காப்பான்
வரனென்னும் வைப்பிற்கோர் வித்து</td></tr>
<tr><td colspan="2">जो दृढ़ता रूपी अंकुश द्वारा पंचेंद्रियों की हाथी को अपने वश में कर लेता है, उसे पर लोक के कण के समान माना जाता है।</td></tr>
<tr><td>குறள் எண் : 25</td><td>ஐந்தவித்தான் ஆற்றல் அகல்விசும்பு ளார்கோமான்
இந்திரனே சாலுங் கரி</td></tr>
<tr><td colspan="2">पंचेंद्रियों पर विजय प्राप्त व्यक्ति की शक्ति, आकाश के अधिपति इन्द्र की शक्ति के समान है।</td></tr>
<tr><td>குறள் எண்: 26</td><td>செயற்கரிய செய்வார் பெரியர் சிறியர்
செயற்கரிய செய்கலா தார்</td></tr>
<tr><td colspan="2">श्रेष्ठ कार्य संपन्न करने वाले व्यक्ति ही श्रेष्ठ हैं, जो श्रेष्ठ कार्य नहीं करता, वह निम्न स्तरीय है ।</td></tr>
<tr><td>குறள் எண்: 27</td><td>சுவையொளி ஊறோசை நாற்றமென் றைந்தின்
வகைதெரிவான் கட்டே உலகு</td></tr>
<tr><td colspan="2">जो शब्द, स्पर्श, रूप, रस एवं गंध के ज्ञाता है, यह संसार उन्हीं के हाथों में है ।</td></tr>
<tr><td>குறள் எண்: 28</td><td>நிறைமொழி மாந்தர் பெருமை நிலத்து
மறைமொழி காட்டி விடும்</td></tr>
<tr><td colspan="2">महिमामंडित संत के सार-गर्भित शब्द, इस संसार के महद्वचन सिद्ध होंगे ।</td></tr>
<tr><td>குறள் எண்: 29</td><td>குணமென்னுங் குன்றேறி நின்றார் வெகுளி
கணமேயுங் காத்தல் அரிது</td></tr>
<tr><td colspan="2">सद्गुण के उत्तुंग शिखर पर आसीन व्यक्ति का क्रोध, अल्प क्षण के लिए भी सहा नहीं जाता ।</td></tr>
<tr><td>குறள் எண்: 30</td><td>அந்தணர் என்போர் அறவோர்மற் றெவ்வுயிர்க்கும்
செந்தண்மை பூண்டொழுக லான்</td></tr>
<tr><td colspan="2">जो धर्मनिरत रहते हुए जो सभी प्राणियों पर प्रेम व दया का भाव रखता है, वही ब्राहमण कहलाने योग्य है ।</td></tr>
</table>

ഒരു കൊറോണ വിശേഷം

കരുതൽ വേണം ! ഭയം വേണ്ട !!

ഇവിടെയടുത്തുള്ള കൊപ്പ എന്ന സ്ഥലത്ത് കഴിഞ്ഞ ആഴ്ച എനിക്ക് ഒരു രോഗിയുമായി പോകാനുള്ള അവസരം ഉണ്ടായി. എൻറ്റെ ജോലി സ്ഥലത്ത് നിന്ന് ഞാനും, ഡ്രൈവറും, രോഗിയും മാസ്ക് ധരിച്ചാണ് പോയത് (ഇപ്പോൾ മാസ്ക് ധരിക്കണം എന്നത് നിയമമാണല്ലോ). അത് കൂടാതെ ഞാൻ കൈകളിൽ ഗ്ലൗസും ധരിച്ചിരുന്നു. ജയപുര എന്ന സ്ഥലത്ത് എത്തിയപ്പോൾ പോലീസിന്റെ ബാരിക്കേഡ്! വണ്ടി നിറുത്തി, എവിടെ പോകുന്നു? എന്തിന്? എന്നിങ്ങനെ ഒട്ടനവധി ചോദ്യ ശരങ്ങൾ, ഞങ്ങൾ പേപ്പറുകൾ കാണിച്ച് അനുവാദം വാങ്ങി വീണ്ടും മുന്നോട്ട് പോയി. കൊപ്പ ടൌണിൽ എത്തിയപ്പോൾ വീണ്ടും പോലീസിൻടെ ചെക്ക് പോസ്റ്റ്, കാര്യം പറഞ്ഞു ബോധിപ്പിച്ചു, വേഗം ഡോക്ടറെ കണ്ട് തിരിച്ചു പോകുവാൻ പറഞ്ഞു, അവിടെങ്ങും ചുറ്റിത്തിരിയണ്ടാന്ന് ഉപദേശവും. ആശുപത്രിയുടെ മുന്നിൽ എത്തിയപ്പോൾ അവിടെ വലിയ ഷാമിയാന വിരിച്ചിരിക്കുന്നു, മൂന്ന് അടി അകലത്തിൽ കസേരകൾ സജ്ജീകരിച്ചിരിക്കുന്നു, ടോക്കൺ എടുത്ത് ഞങ്ങൾ കസേരയിൽ ഇരിപ്പുറപ്പിച്ചു. കുറേ കഴിഞ്ഞപ്പോൾ ഒരാൾ വന്ന് നമ്പർ വിളിച്ചു, രോഗിയും ആവശ്യമെങ്കിൽ ഒരാൾ കൂടെയും അകത്തേക്ക് ചെല്ലാൻ പറഞ്ഞു, പ്രവേശന കവാടത്തിൽ വെച്ച് തന്നെ സാനിറ്റൈസർ കൈയ്യിൽ ഒഴിച്ച് തന്നു, കൈകൾ ശുചിയാക്കി ഉള്ളിലേക്ക്, ശരീര ഊഷ്മാവ് പരിശോധനക്ക് ശേഷം ചീട്ടെടുക്കുന്ന കൗണ്ടറിലേക്ക്, അവിടെയും മൂന്ന് അടി അകലത്തിൽ ചതുരം വരച്ചിട്ടുണ്ട്. ഒരു ചതുരത്തിൽ നിന്ന് നീങ്ങി മറ്റൊന്നിലേക്ക്. ചീട്ടെടുത്ത് ഡോക്ടറുടെ ക്യാബിനിലേക്ക്, മൂന്ന് നാല് പേർ ക്യൂവിൽ, എല്ലാവർക്കും മാസ്ക് ഉണ്ട്. ഞങ്ങളുടെ മുറ വന്നപ്പോൾ ഡോക്ടറിനെ കണ്ടു, അകലം പാലിച്ചാണ് ഡോക്ടറുടെയും ചികിത്സ, അദ്ദേഹവും മാസ്ക്കും, ഗ്ലൗസും, ഗൗണും ധരിച്ചിരിക്കുന്നു. ദൂരം പാലിച്ച് തന്നെ കാര്യങ്ങൾ ചോദിച്ചറിഞ്ഞ് മരുന്ന് കുറിച്ചു. ഇംജക്ഷൻ എടുക്കുവാനായി രോഗിയുമായി അടുത്ത മുറിയിലേക്ക് പോയി, അതിന് അടുത്താണ് കോവിഡ് ഉണ്ടോ എന്ന് പരിശോധിക്കുവാൻ രോഗികളുടെ ശ്രവം എടുക്കുന്ന സ്ഥലം, ഞാൻ ആ റൂമിലേക്ക് ഒന്ന് പാളി നോക്കി. ഒരു എസ് ടി ഡി ബൂത്ത് പോലെ ഒരു ചെറിയ കാബിനിൽ ഒരാൾ എല്ലാ തരത്തിലുള്ള സുരക്ഷാ കവചങ്ങളും അണിഞ്ഞ് നിൽക്കുന്നു, അതിൽ നിന്ന് തന്നെ പുറത്തേക്ക് ഘടിപ്പിച്ചിരിക്കുന്ന ഗ്ലാസ്സിലൂടെ കൈ കടത്തി രോഗിയിൽ നിന്ന് ശ്രവം ശേഖരിക്കുന്നു. അതിന് ശേഷം ആ ചേംബറിന്റെ അകവും പുറവും സാനിറ്റൈസ് ചെയ്യുന്നു, ധരിച്ചിരിക്കുന്ന ഗ്ലൗസ് മാറ്റി പുതിയവ ധരിക്കുന്നു. കൈകൾ വീണ്ടും സാനിറ്റൈസ് ചെയ്യുന്നു, അടുത്ത രോഗിയുടെ ശ്രവം ശേഖരിക്കാനുള്ള തയ്യാറെടുപ്പുകൾ ആണ്.

ഞങ്ങൾ മരുന്നും വാങ്ങി തിരികെ വന്നു. ഞാൻ താമസ സ്ഥലത്തെത്തി ധരിച്ചിരുന്ന വസ്ത്രങ്ങൾ എല്ലാം സോപ്പ് ലായനിയിൽ മുക്കിവച്ചു. ബെൽറ്റും, മൊബൈലും, കാശും ഒക്കെ സാനിറ്റൈസർ ഉപയോഗിച്ച് വൃത്തിയാക്കി, ഗ്ലൗസും മാസ്ക്കും കത്തിച്ചു കളഞ്ഞു. ഒന്ന് നന്നായി കുളിച്ച് വന്നു.

ഇതൊക്കെ ഇവിടെ പറഞ്ഞത് എന്തിനെന്ന് വച്ചാൽ ലോക്ക് ഡൗൺ കഴിയുന്നത് നമ്മൾക്കാണ് വൈറസ്സിനല്ല എന്ന് ഓർമ്മിപ്പിക്കാനാണ്. ലോക്ക് ഡൗണിന് ശേഷവും അത്യാവശ്യത്തിന് മാത്രം പുറത്തിറങ്ങുക, പുറത്തിറങ്ങുമ്പോൾ നിർബന്ധമായും മാസ്ക് ഉപയോഗിക്കുക, സാമൂഹിക അകലവും, ശരീര ശുചിത്വവും പാലിക്കുക. ഇവിടെ മഹാമാരിയെ തുരത്താൻ മുൻ കരുതൽ ആണ് പ്രധാനം...

സേതു റോയ്, സീനിയർ കമ്പൌണ്ടർ-സ്റ്റോർ കീപ്പർ, സി സി ആർ ഐ

కాఫీ తోటలలో నీడ చెట్ల ప్రాముఖ్యత మరియు యాజమాన్యం

భారత దేశంలో పండించే వాణిజ్య పంటలలో కాఫీకి ఒక విశిష్ట స్థానం వుంది. ఈ కాఫీ పంట భారత దేశపు పంట కాదు ఇది ఆఫ్రికా ఖండంలోని సమశీతోష్ణ ప్రాంతంకు చెందిన పంట, కనుక ఈ పంటను భారత దేశంలో నీడ చెట్ల క్రింద పెంచి దానికి తగినన్ని వాతావరణ పరిస్థితులు చేకూర్చి సాగు చేస్తారు. భారత దేశంలోని కాఫీ సాగు ప్రాంతాలు సుమారు 4 నుండి 5 నెలలు నీటి ఎద్దడికి గురి అవుతాయి అందు కారణముగా కాఫీ మొక్కలను భారత దేశంలో నీడ క్రింద పెంచుతారు. నీడ చెట్లు ముఖ్యముగా కాఫీ మొక్కలకు అనుకూల సూక్ష్మ వాతావరణ పరిస్థితులను కలిగిస్తాయి, అంతే కాకుండా నేలలోని తాపాన్ని మరియు తేమను సంరక్షిస్తాయి. అవి సూర్యకాంతి తీవ్రతను, వేడిని తగ్గిస్తాయి, క్షామ పరిస్థితులను తగ్గించి నేలలోని తేమను సంరక్షిస్తాయి తద్వారా మొక్కలకు నీటి కొరతను తగ్గిస్తాయి, అంతేకాకుండా మొక్కలను వడ గండ్ల వాన వలన కలిగే నష్టాన్ని తగ్గిస్తాయి, పెను గాలుల తీవ్రత నుండి కాపాడతాయి, తగు మోతాదులో నీడ ఉంటే తోటలోని నీడ చెట్ల ఆకులు రాలి అవి నేల సారాన్ని పెంచతాయి, నేలలోని సేంద్రియ గుణాన్ని పెంచతాయి, నీడ చెట్లు తోటలో వ్యాపించే వ్యాధులు, పురుగులు ఉధృతిని కూడా నియంత్రిస్తాయి.

ఆంధ్ర రాష్ట్రంలోని కాఫీ సాగు ప్రాంతాలలోని ప్రస్తుత నీడ పరిస్థితి

కాఫీ తోటలు ఎక్కువుగా పోడు భూముల్లో ఒకే జాతి నీడ చెట్లు క్రింద అంటే సిల్వర్ నీడలో పెంచ బడి ఉన్నాయి. కేవలం చింతపల్లి, గూడెం, పాడేరు మండలాలలోని కాఫీ తోటలు మాత్రమే మిశ్రమ రకాల నీడ చెట్ల క్రింద పెంచ బడి ఉన్నాయి అంటే సహజమైన అడివి కింద ఉన్నాయి. అధికముగా ఒకే జాతి నీడ చెట్లు సిల్వర్ మరియు ఆకు రాల్చే జాతి నీడ చెట్లు (Decidious) కాఫీ తోటలలో ఉండటం వలన కాఫీ తోటలలో ఉష్ణోగ్రతలు పెరిగి కాఫీ మొక్కల ఎదుగుదలకు ప్రతికూల పరిస్థితులు ఏర్పడుతున్నాయి. కాఫీ తోటలలో మిశ్రమ జాతి నీడ లేకపోవట వలన కాఫీ మొక్కలు త్వరిత గతని క్షీణించి పోతున్నాయి.

కాఫీ తోటలలో తగిన నీడ లేక పోతే ఏమీ జరుగుతుంది

- నీడ లేని కాఫీ తోటలలోని నెల, గాలి మరియు కాఫీ మొక్కల ఆకులు యొక్క ఉష్ణోగ్రత ఎక్కువగా ఉంటుంది.
- తోటలలోని ఉష్ణోగ్రతలు 26 డిగ్రీ పైన ఉంటే కాఫీ మొక్కలోని కిరణ జన్య ప్రక్రియ తగ్గిపోతుంది
- నీడ లేక పోవట వలన ఆకు రాలును, అధికముగా కాఫీ కాయలు కాచి మొక్క క్షీణించి పోయి చనిపోతుంది. నీడ తక్కువగా ఉండట వలన కాఫీ తోటలలో పెరిగిన ఉష్ణోగ్రత వలన మొక్కల యొక్క కాపు కాసే గుణం మరియు నాణ్యత పైన దుష్ప్రభావం ఉంటుంది.
- నీడ సరిగా లేని కాఫీ తోటలలో ఆకు మచ్చ తెగులు మరియు కాండం తొలుచు రెక్కల పురుగు ఉదృత అధికముగా ఉంటుంది. అంతే కాకుండా ద్వితీయ శ్రేణి పురుగులైన పొలుసు పురుగులు, పిండి పురుగుల ఉదృత ఎక్కువ అవుతుంది.

నీడ చెట్లకు ఉండవలసిన గుణాలు

- త్వరిత గతిని పెరిగే గుణం
- వానా కాలంలో ఆకులు రాల్చి మరలా వానా కాలం చివరకు ఆకులు, కొమ్మలు వచ్చే గుణం

- నెల మిద పడిన ఆకులు త్వరగా కుళ్లి నెలకు బలం ఇచే గుణం
- పెను గాలులు మరియు వడగండ్లు తట్టుకునే స్వభావం కలిగి ఉండాలి
- భూమి లోనికి లోతుగా వేర్లు చోచుకుపోయే గుణం కలిగి పై పొర లోని తేమ మరియు పోషకాలకు కాఫీ మొక్కలతో పోటి పడని స్వభావం కలిగి ఉండాలి
- కాఫీ మొక్కలకు ఆశించే పురుగులు, జబ్బులు అ చెట్లను ఆశించకూడదు
- (మన ప్రాంతంలో సాగు చేసే అరాబికా రకాలకు 50-60 శాతం నీడ కావాలి)
- కాంతి తీవ్రత ద్వారా నీడను నిర్దేశిస్తారు, లక్స్ మీటర్ అనే పరికరం ద్వారా కాంతి తీవ్రతను కోలుస్తారు ఈ కాంతి తీవ్రత అరాబికా రకాల కాఫీ తోటలలో సుమారు 55,000 నుండి 70,000 లక్స్ యూనిట్లు ఉండాలి అప్పుడే కాఫీ మొక్కలు వాంఛనీయ కిరణ జన్య క్రియను కొనసాగిస్తాయి తద్వారా ఆరోగ్యముగా ఉండి నిలకడ అయిన దిగుబడిని ఇస్తాయి

నీడను ఏ విధంగా అభివృది చేయాలి ,నీడ చెట్ల మద్య దూరము

ఎక్కువ కాంతి తీవ్రత మరియు అధిక ఉష్ణోగ్రతలు కాఫీ మొక్కలకు ప్రమాదకరం కనుక కాఫీ మొక్కలను వీటి నుండి కాపాడుకోవాలి అందు కొరకే నీడను రెండు అంచెలుగా పెంచుకోవాలి

- శాశ్వత మరియు తాత్కాలికముగా నీడ నిచ్చు చెట్లను పెంచుట ద్వారా రెండు అంచెలుగా నీడను నెలకొల్పటం జరుగుతుంది.
- సహజ సిద్దమైన అడవిలో కొత్త కాఫీ తోటలు వేసేటప్పుడు అనుకూలమైన అడవి చెట్లను ఉంచి, మిగిలిన చెట్లను తిసివేసుకోవాలి,
- ఆంధ్ర రాష్ట్రంలో కాఫీ సాగు ప్రాంతాలకు అనుకూలమైన శాశ్వత నీడ చెట్లు అనుగా అత్తి, సింధుగా, చెన్నంగి, సంపంగి, టూసీ, వెగిస, నేరేడు, పనస, అల్బిజియా, మామిడి పెంచుకోవాలి వీటి మద్య దూరం 40 అడుగులు ఉంచాలి, ఎకరానికి 30 శాశ్వత చెట్లు ఉండేటట్లు చూసుకోవాలి. ఈ చెట్లను 30 అడుగులు ఎత్తుకు పెంచుకోవాలి.
- కఠినమైన వాతావరణం మరియు ఒకే నీడ చెట్లను పెంచుట వలన కలిగే ప్రతికూల ప్రభావము బారిన పడకుండా ఉండేందుకు మిశ్రమ నీడ ఉపయోగపడుతుంది. (ఉదాహరణ హుడ్ హూద్ తుఫాను)
- తాత్కాలిక నీడ చెట్ల అయిన బాడిద, టేస్మానియం, సొలానం, ఆముదం వంటి మొక్కలను 12 అడుగుల దూరము లో నాటుకోవాలి, నీడను గుబురుగా కాకుండా పలుచగా ఉంచాలి.
- సిల్వర్ మొక్కలను సాధ్యమైన మేరకు తక్కువగా వేసుకోవాలి ఎందుకంటే సిల్వర్ నీడ కింద ఉన్న కాఫీ తోటలలోని నేల మరియు వాతావరణం ఎక్కువ వేడిగా ఉంటుంది, అంతే కాకుండా నేల మిద రాలిన సిల్వర్ ఆకులు త్వరగా కుళ్లవు అందు వలను నేలకు ఎటువంటి ఉపయోగం ఉండదు.
- ఋతు క్రమములను బట్టి నీడ చెట్లను క్రమబద్ధం చేసుకోవాలి, నీడను జూన్ మాసంలో క్రమబద్ధం చేసుకోవాలి, శాశ్వత నీడ చెట్లను క్రమబద్ధం చేసేటప్పుడు, క్రింద కు వేలాడే కొమ్మలు, రెమ్మలు తీసివేసి చెట్టును గొడుగు ఆకారంలో తయారు చేసుకోవాలి, ఇదే విధంగా తాత్కాలిక నీడ చెట్లను కూడా వర్షాకాలంలో క్రమబద్ధం చేసుకోవాలి.

- మిరియాల పాదులను ఒక ఎకరానికి 40 మించకుండా జాగ్రత్త తీసుకోవాలి ఇవ్వి ఎక్కువ అయితే తోటలోనికి గాలి ప్రసరణ జరగక సూక్ష్మ వాతావరణంలో మార్పు వచ్చి కాఫీ మొక్క ఎదుగుదలకు ఇబ్బంది కరం అవుతుంది.
- పోడు భూముల్లో కాఫీ మొక్కలు నాటుటకు రెండు సంవత్సరాల ముందు నీడను అభివృది చేసి అటు తర్వాత కాఫీ మొక్కలు నాటుకోవాలి, ముందుగా తాత్కాలిక నీడ చెట్లను పెంచుకొని క్రమంగా ఈ చెట్లకు బదులు శాశ్వత నీడ చెట్లను పెంచుకోవాలి.

డి. సునీల్ బాబు, అసిస్టెంట్ అగ్రోనోమిస్ట్

ప్రాంతీయ కాఫీ పరిశోధన స్థానం, నర్సీపట్నం

हमारी अनिवार्य आवश्यकताएँ

- ❖ राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3) के अनुसार सामान्य आदेश, संकल्प, नियम, अधिसूचनाएँ, संविदाएँ, करार, निविदा प्रारूप, निविदा सूचनाएँ, सभी प्रशासनिक या अन्य रिपोर्टें, प्रेस विज्ञप्तियाँ, अनुज्ञप्तियाँ, अनुज्ञा पत्र, संसद के दोनों सदनों के समक्ष रखे जाने वाले प्रशासनिक व अन्य प्रतिवेदन तथा सरकारी कागज़ात अनिवार्यत: द्विभाषी में अर्थात हिंदी एवं अँग्रेज़ी में ही जारी करें। इसका दायित्व हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी पर निहित हैं।
- ❖ राजभाषा नियम 5 के अनुसार हिंदी में प्राप्त/ हस्ताक्षरित पत्र, आवेदन, अपील या अभ्यावेदन के उत्तर केवल हिंदी में प्रदान करना अनिवार्य हैं।
- ❖ सरकारी विज्ञापन, वेबसाइट, लेखन-सामग्रियाँ (पहचान पत्र, परिचय-पत्र, बोर्ड,बैनर आदि), आवरण पत्र, अग्रेषण पत्र, रबड मोहरें, नाम पट्ट, सूचना पट्ट, फाइल कवर व रजिस्टरों पर विषय आदि द्विभाषी में ही हों।
- ❖ यदि हिंदी प्रशिक्षण के लिए कोई शेष हों तो उन्हें यथाशीघ्र प्रशिक्षण के लिए नामित करें।
- ❖ यदि किसी कार्यालय के 80% से अधिक अधिकारी/कर्मचारी प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं तो उस कार्यालय को राजभाषा नियम 1976 के नियम 10 (4) के अधीन अधिसूचित करें।
- ❖ प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्यन समिति की बैठक आयोजित करें तथा तिमाही प्रगति रिपोर्ट मुख्य कार्यालय को भेजें।
- ❖ सितंबर माह के दौरान 14 सितंबर को सम्मिलित करते हुए विभिन्न प्रतियोगिताओं के साथ हिंदी दिवस/हिंदी पखवाडा आयोजित करते हुए उसकी रिपोर्ट मुख्य कार्यालय को भेजें।

राजभाषा हिंदी में काम करते समय

शब्दों के लिए अटकिए नहीं,
शैली के लिए रुकिए नहीं,

अशुद्धियों से घबराइए नहीं,
निस्संदेह आपकी भाषा सुधरेगी
आपको हिंदी सरल एवं सुगम लगेगी।

राष्ट्र की शान है राष्ट्र भाषा, शासन की वाणी है राजभाषा
संपर्क का सूत्र है संपर्क भाषा, ममता बढ़ाती है मातृभाषा

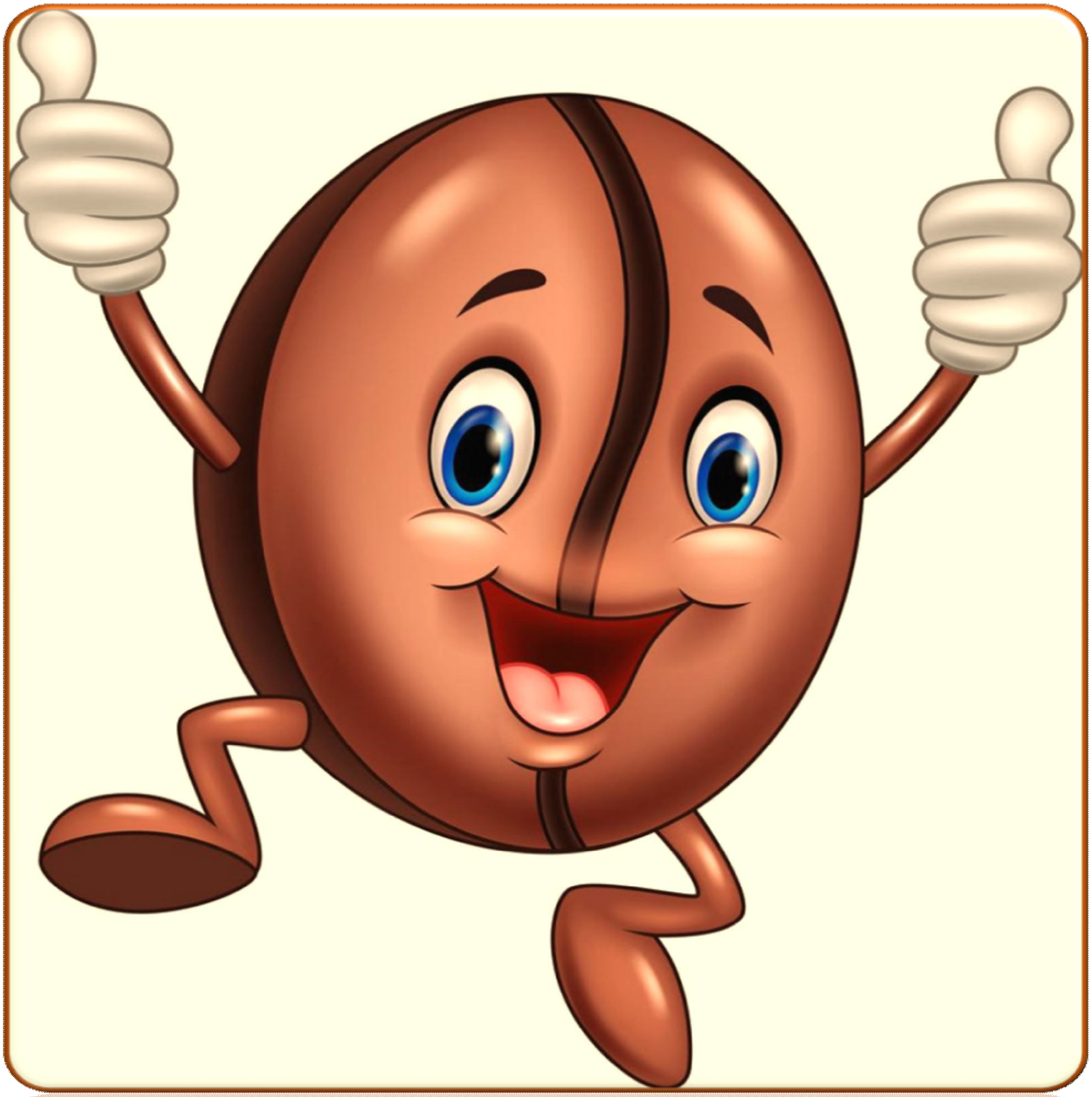

कॉफ़ी बोर्ड

राजभाषा स्कंध, बेंगलूरु

ई-मेल- cbolwing@gmail.com